चकमक

अक्टूबर, 2000 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00

सूरज डूबा, पंछी लौटे

● पल्लवी व्यास, सोनकच्छ, देवास, म.प्र.

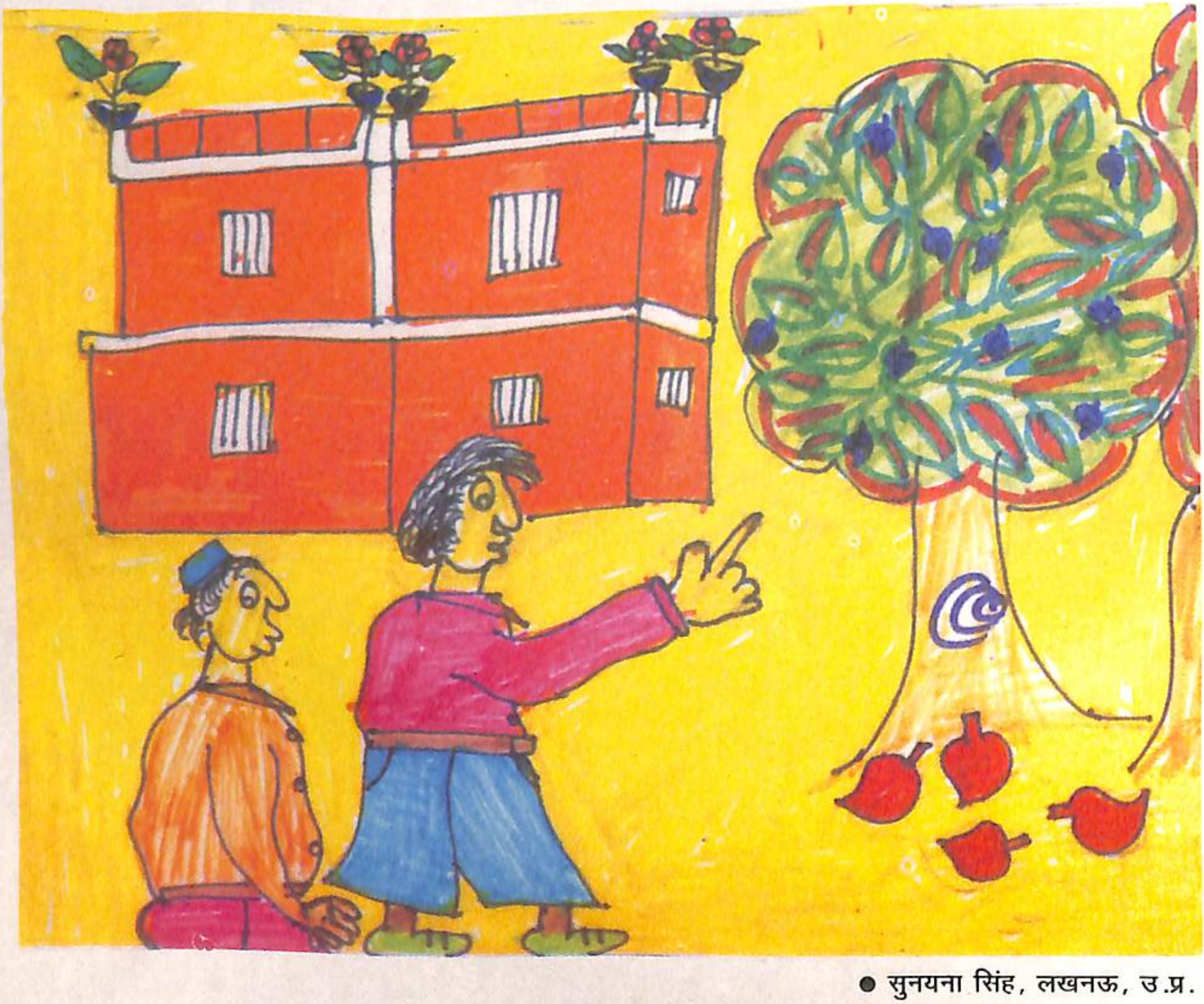

● सुनयना सिंह, लखनऊ, उ.प्र.

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

अक्टूबर, 2000 के 181 वें अंक में

विशेष

एक शाम पंछियों के नाम

अगर कभी ऐसा हो कि हमारे आसपास हमें चिड़ियों की आवाज़ें न सुनाई दें तो . . .।

लेकिन ऐसा नहीं होता। हम सुबह उठते ही प्रकृति के इन शानदार जीवों को देखते हैं, उनको सुनते हैं। थोड़ी कोशिश और करें तो उनकी गतिविधियों को ज़्यादा अच्छे से देख और समझ सकते हैं। इसी तरह की कोशिश करके किशोर पवाँर ने अपने अनुभव हमें लिखे। तुम भी पढ़ो पेज, 19 से।

डाक दिवस

जब तुम हमें पत्र लिखते हो या अपनी कोई रचना भेजते हो तब तुम उसे पोस्ट करके निश्चित हो जाते हो, कि वो हम तक पहुँच ही जाएगी। इसी चिट्ठी को लाने वाले डाकिए से हमने इस बार थोड़ी बात की। पढ़ो, पेज 4 पर।

नाटक

14 कागभगोड़ा

कविताएँ

3 हरी हँसी हँसती है
22 अक्टूबर का एक दिन
36 चूहेदानी

हर बार की तरह

2 इस बार की बात
28 वर्ग पहेली
34 माथापच्ची

रोचक श्रृंखला

17 गीत–संगीत : 3
25 खेल दुनिया भर के : क्रिकेट
29 हमारे शिक्षक – 21

मेरा पन्ना

तुम्हारी अपनी रचनाएँ और तुम्हारे चित्र : पृष्ठ 5 से 9 और 40 पर

धारावाहिक

10 प्यारा कुनबा : 8

और भी बहुत कुछ

13 एक मज़ेदार खेल : कार्ड
23 कैलेंडर के खेल
33 गणित की पहेलियाँ
37 खेल–खेल में : पुतली बनाओ

आवरण : 'इंडियन वाइल्ड लाइफ' से साभार। फोटो : राजेश बेदी।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

एक बार फिर दीपावली आ पहुँची है। दीपावली रोशनी का त्यौहार माना जाता है। खूब दिए जलते हैं, आतिशबाजी होती है। पर जैसी कि कहावत है 'दिया तले अँधेरा'। जो आतिशबाजी हमें खुशी और उमंग से भर देती है, उसे बनाने में बहुत से नन्हे-मुन्ने अपना बचपन लगा रहे हैं। चकमक में हम पहले भी इस बात का ज़िक्र कर चुके हैं। लेकिन कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें बार-बार दोहराना पड़ता है।

देश भर में जहाँ कहीं भी पटाखे या आतिशबाजी बनाई जाती है, वहाँ मज़दूरों के रूप में अधिकतर बच्चे ही काम करते हैं। पटाखा उद्योग में बहुत ही जोखिम भरा काम होता है। इसमें होने वाली दुर्घटनाओं में हर वर्ष सैंकड़ों मज़दूर (बड़े और बच्चे) या तो अपनी जान गँवाते हैं या फिर अपाहिज हो जाते हैं।

हमारे मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में दिसम्बर, 99 में ऐसी ही एक फैक्ट्री में आग लगने से एक बाल-मज़दूर की मृत्यु हो गई थी। कई अन्य घायल भी हुए थे।

घूम-फिरकर सवाल यही है कि यह सब कब तक चलेगा? बालश्रम कानून भी है, पर वह कहाँ कारगर है? कौन उसकी परवाह कर रहा है?

आखिर इस सबके लिए कौन ज़िम्मेदार है? सरकार, समाज या हम?

सोचना तुम्हें भी है।

चित्र : शरद रंजीत

● चकमक

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-16 अंक-4 अक्टूबर, 2000

सम्पादन	वितरण
विनोद रायना	कमल सिंह
राजेश उत्साही	मनोज निगम
कविता सुरेश	अशोक रोकड़े
टुलटुल विश्वास	**सहयोग**
विज्ञान परामर्श	राकेश खत्री
सुशील जोशी	सुशील शुक्ल

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म.प्र.)
फोन : 563380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

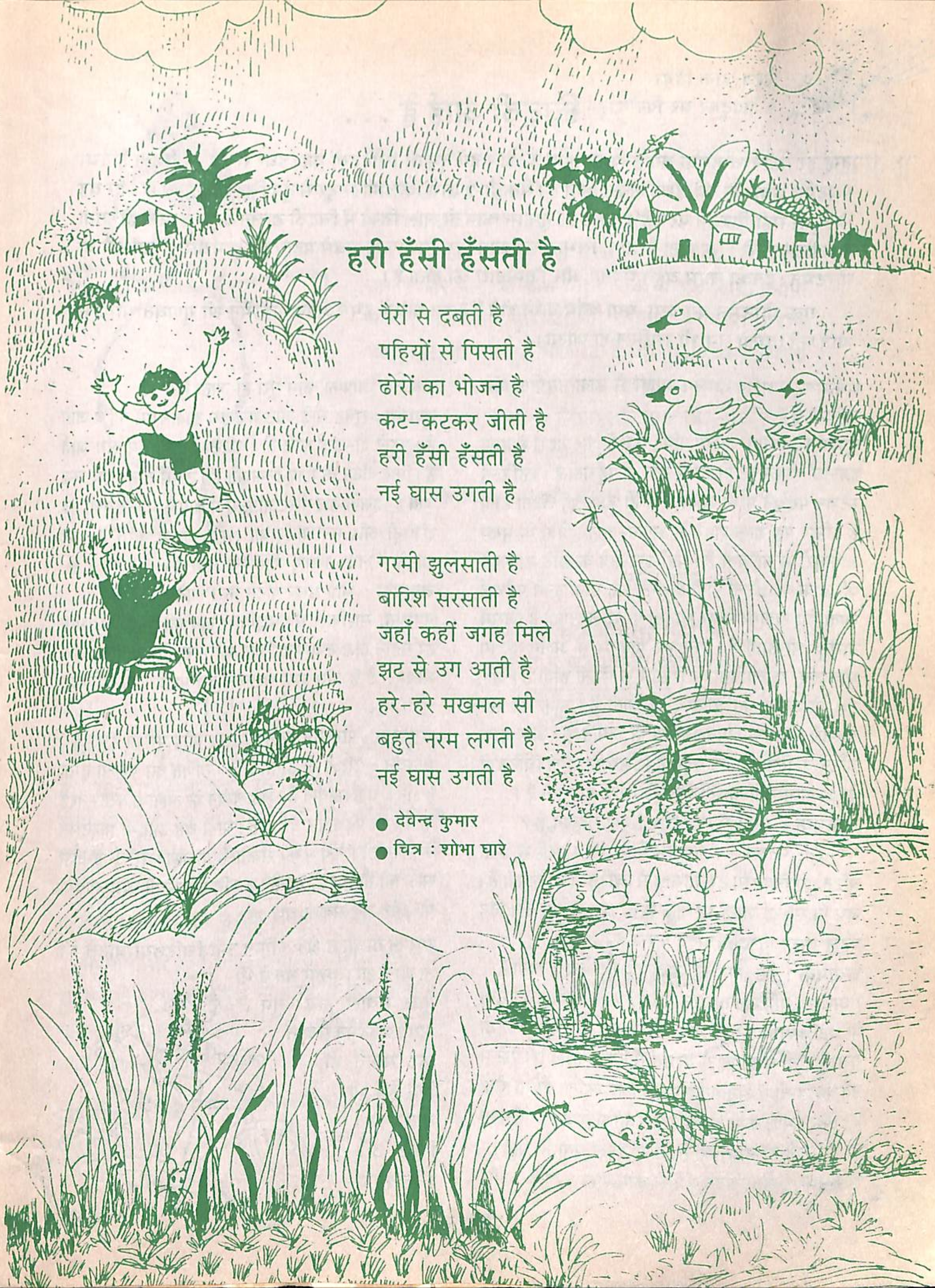

हरी हँसी हँसती है

पैरों से दबती है
पहियों से पिसती है
ढोरों का भोजन है
कट-कटकर जीती है
हरी हँसी हँसती है
नई घास उगती है

गरमी झुलसाती है
बारिश सरसाती है
जहाँ कहीं जगह मिले
झट से उग आती है
हरे-हरे मखमल सी
बहुत नरम लगती है
नई घास उगती है

● देवेन्द्र कुमार
● चित्र : शोभा घारे

विश्व डाक दिवस
9 अक्टूबर पर विशेष

चिट्ठी आई है . . .

तुम्हें हर महीने चकमक का इंतज़ार रहता है, और हमें तुम्हारी चिट्ठियों का। इधर रोज़ एक बजता है उधर पोस्टमैन चकमक की डाक लेकर आते हैं। सैकड़ों-हज़ारों किलोमीटर दूर से तुम चिट्ठी लिखते हो और वह बिल्कुल सही ठिकाने पर पहुँच जाती है। तुम्हारा काम तो लाल डिब्बे में चिट्ठी डालने के बाद खत्म हो जाता है। और यहीं से शुरू होता है डाक विभाग का काम। इस विभाग के सबसे महत्वपूर्ण कर्मचारी हैं डाकिये या पोस्टमैन। इनका काम बहुत मेहनत और ज़िम्मेदारी का होता है।

एक पोस्टमैन को क्या-क्या काम करने होते हैं? इस बारे में हमने अपने पोस्टमैन श्री गुणवंत भोया से बात की। चलो तुम भी शामिल हो जाओ।

चकमक : अलग-अलग जगहों से डाक हम तक कैसे पहुँचती है?

गुणवंत : अलग-अलग गाँवों, कस्बों और शहरों से डाक इकट्ठी होकर रेल से हमारे शहर में पहुँचती है। वहाँ रेल्वे स्टेशन पर बने पोस्ट ऑफिस में ही डाक की छँटनी होती है। फिर यह डाक शहर के अलग-अलग क्षेत्रों के मुख्य डाकघरों में पहुँचती है। यहाँ उस क्षेत्र के छोटे डाकघरों की डाक की छँटनी होती है। फिर यह डाक उनमें पहुँचाई जाती है। डाकघर में हर चिट्ठी पर सील लगती है जिसमें तारीख भी होती है। फिर हर डाकघर में अलग-अलग मोहल्लों, कॉलोनियों के हिसाब से छँटनी होती है। और तब पोस्टमैनों को डाक दे दी जाती है। डाक को सब पोस्टमैन अपने-अपने हिसाब से जमाते हैं। और डाक बाँटने के लिए निकल पड़ते हैं। इसमें साधारण चिट्ठियों के अलावा मनीआर्डर, रजिस्ट्री आदि भी होती है।

चकमक : अपने हिसाब से का क्या मतलब है?

गुणवंत: मतलब यह कि हम कैसे, किस गली से डाक बाँटते हुए निकलेंगे उस हिसाब से चिट्ठियों को जमाते हैं। जब किसी नई जगह पर जाते हैं तो शुरू के दो-तीन दिन पहले वाला पोस्टमैन मदद करता है।

चकमक : इस काम में बहुत मुश्किलें आती होंगी?

गुणवंत: मुश्किलें तो आती ही हैं। कभी-कभी चिट्ठियों के पते अलग-अलग भाषाओं में होते हैं। कोई चिट्ठी गुजराती, तो कोई मराठी या उर्दू में लिखी होती है। ऐसे में पते का हिन्दी में अनुवाद करने के लिए व्यक्ति ढूँढना होता है। फिर हमारा काम तो चिट्ठियों को सही जगह पहुँचाना ही है। भले ही हमें कितनी ही मुश्किलें क्यों न आएँ।

चकमक : आप कितने बजे से काम शुरू करते हैं? और कब तक आपका काम पूरा हो जाता है?

गुणवंत : सुबह साढ़े आठ बजे हम डाकघर में पहुँच जाते हैं। पहले दो-ढाई घण्टे तो चिट्ठियाँ जमाने में लग जाते हैं। फिर बाँटने के लिए निकलते हैं। उसमें तीन-चार बज जाते हैं। इसके बाद पोस्टऑफिस में वापस आकर बची हुई रजिस्ट्री और मनीऑर्डर का लेखा-जोखा करते हैं। घर लौटने में लगभग साढ़े चार बज जाते हैं।

चकमक : आप डाक बाँटने कैसे जाते हैं?

गुणवंत: साइकिल से। साइकिल खुद की ही है। विभाग हर महीने तीस रुपए साइकिल का भत्ता देता है। वैसे ड्रेस भी मिलती है और ड्रेस धुलवाने का पंद्रह रुपए प्रतिमाह भत्ता भी।

चकमक : पोस्टमैन बनने के लिए कोई परीक्षा होती है?

गुणवंत : परीक्षा तो होती ही है। गणित की परीक्षा होती है। निबन्ध लिखवाते हैं। शुद्धलेखन के अलावा तरह-तरह के पते भी पढ़वाकर देखते हैं। यानी वह आदमी पोस्टमैन का काम ठीक ढंग से कर सकता है या नहीं। मेरी तो उन्नीस साल की नौकरी हो गई है। उन दिनों आठवीं पास आदमी पोस्टमैन बन सकता था।

सवाल तो बहुत थे। लेकिन उन्हें चिट्ठियाँ बाँटने भी तो जाना था। तुम्हारे मन में भी कुछ सवाल होंगे। तुम अपने पोस्टमैन से बात कर सकते हो, फिर हमें भी बताना। चिट्ठी लिखकर।

● प्रणव वशिष्ठ, पहली, भोपाल, म. प्र.

जोकर

एक बार मैं और मेरे पापा मेला देखने गए। वहाँ एक आदमी ने अपने सिर में मटकी लगा रखी थी। और ऊपर से नीचे तक चादर लपेट रखी थी। वह आओ, आओ करके बुला रहा था। उसे देखकर मैं डर के मारे रोने लगा। और पापा के हाथ को कसके पकड़ लिया। पापा ने रोने का कारण पूछा तो मैंने उँगली से इशारा करके बताया कि वो भूत मुझे डरा रहा है। पापाजी उसे देखकर हँसने लगे और बोले, बेटा वो सरकस का जोकर है। वह सबको सरकस देखने के लिए बुला रहा है। इतना कहकर पापाजी मुझे सरकस दिखाने ले गए।

● मुकेश ठाकुर, दूसरी, कोटमी सुनार, बिलासपुर, म. प्र.

मज़ा आया

गर्मियों की छुट्टियाँ थीं। मेरी दीदी पूनम बुआ के यहाँ चली गई। मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने पापाजी से कहा कि मुझे भी मामा के यहाँ भेज दो। पापा ने अनसुनी कर दी। लेकिन मैं जिद पर अड़ गई कि मैं मामा के यहाँ टीकमगढ़ जरूर जाऊँगी। मम्मी ने कहा कि सोनम को उसके मामा के यहाँ भेज दो।

मैं मामा के यहाँ जाने लगी तो मेरा छोटा भैया साकेत रोने लगा कि मुझे भी मामा के यहाँ जाना है। माँ ने भैया को मनाया कि मैं तुम्हें फुटबॉल ले आऊँगी। भैया मान गया।

मैंने मामा के यहाँ बड़ी मस्ती की। आइसक्रीम, खजूरी, तरबूज खूब खाए। बड़ा मज़ा आया।

● सोनम गुप्ता, तीसरी, शाहगढ़, सागर, म. प्र.

कौआ

धुन का पक्का चतुर निराला
कौआ है यह काला-काला
काँव-काँव की टेर सुनाता
आएँगे मेहमान बताता
झपट छीन ले भागने वाला
बड़ा सयाना कौआ काला।

● मोनिका कुमारी, छठवीं, बलिया, उ. प्र.

● दीपक जगताप, दूसरी, सतवास, देवास, म. प्र.

● अंजलिना परमार,
महू, म. प्र.

दीप जले

दीपावली जब आती,
सबके मन को भाती।
जगमग-जगमग कर जाती,
अँधियारा दूर भगाती।
बच्चे जब पटाखे फोड़ें,
आसमान फट जाए।
तारे नीचे गिर पड़ें,
आँगन में दीप देखकर,
चंदा भी भाग जाए।
जब दीपावली आए,
आसमान जग जाए।
जले दीप देख रोशनी
अँधियारा मिट जाए।
जब दीपावली आए।

● विनोद कुमार प्रजापति, ग्यारहवीं, उज्जैन, म.प्र.

दीवाली

जगमग-जगमग आई दीवाली
सबके मन को भाई दीवाली
फूल झरे फुलझड़ी से,
दिए जले सबके घर में,
आई दीवाली।
पकवान बन रहे हैं सबके घर में
पुताई से घर में उजाले आए
लक्ष्मी जी की करेंगे पूजा
दीवाली मनाएँ शान से
मगर सावधानी से
न हों पटाखे ज्यादा धमाकेदार
नहीं तो होगा बुरा हाल
मिल-जुलकर मनाओ दीवाली।

● पूर्वा वशिष्ठ, पाँचवी, भोपाल, म.प्र.

दीपावली

दीपावली का त्यौहार है आया
सारी खुशियाँ बटोरकर लाया।
घर-घर में हैं दीप जले
बल्बों की लड़ियाँ सजें।
रॉकेट गया आकाश में
बड़ी ही शान ठान से।
घूम-घूमकर नीचे आया
जब उसका सर बिलकुल चकराया।
चकरी तो है बहुत निराली
कैसे घूम रही मतवाली।
फुलझड़ी जला रहे हैं बच्चे
गोल-गोल अँगारे छूटें।
देखो अब चला अनार
लगता है हीरे का हार।
बच्चों के तो ठाठ निराले
सोचें खूब मिठाई खालें।
सारा शहर सजा-धजा है
जैसे दुल्हन का गहना है।
सुन्दर-सुन्दर कपड़े पाकर
बच्चे निकले खुशियाँ पाकर।
कितना अच्छा यह दिन आया
दीपावली का त्यौहार आया।

● ऋचा मनु, फरीदाबाद, हरियाणा

दीवाली

आई आई दीवाली आई
बच्चों ने छोड़े पटाखे,
मम्मी ने बनाई मिठाई,
आज सभी खुश हैं,
सबने खाई मिठाई।
आई आई दीवाली आई।

● भारती साहू, सातवीं, भोपाल, म. प्र.

● चित्र : अभिषेक गौर, तीसरी, पलानी माल, हरसूद, खण्डवा, म. प्र.

● मनु पाण्डे, अल्मोड़ा, उ.प्र.

व्यथा हमारी कॉलोनी की

हम धार नगर की एक कॉलोनी, जो बस स्टैण्ड के पीछे बनी है, उसका नाम श्रीनगर है, वहाँ पर रहते हैं। हमारी कॉलोनी का नाम तो श्रीनगर है लेकिन बारिश में वह कीचड़ का नगर हो जाती है। एक बार तीन दिन लगातार तेज वर्षा होने के कारण हमारी कॉलोनी पानी में इतनी डूब गई कि उसमें रहने वाले लोगों को नाव से निकाला गया। वहाँ की कई लोगों ने वीडियो शूटिंग की, कई ने फोटो खींचे और वहाँ पर लोगों ने जो दृश्य देखा, वह भूला नहीं जा सकता है। यह हमारी कॉलोनी की व्यथा है।

● नकमी नाज़, धार, म.प्र.

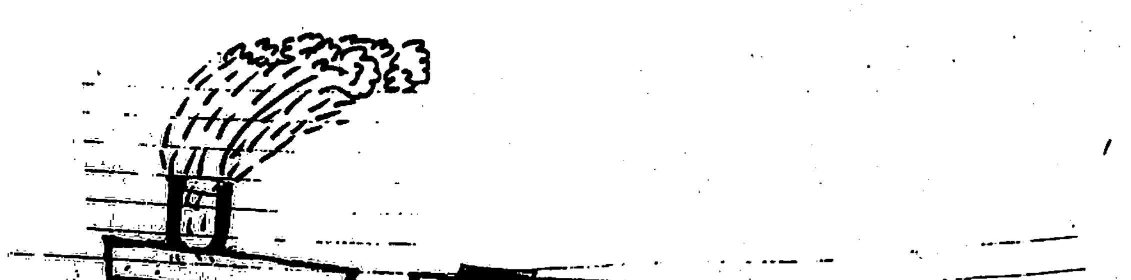

● रामनिवास पटैरया, आठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

mगजरजननन

टिड्डे का ऑपरेशन

एक बार की बात है, एक टिड्डा बैठा था। मैं ब्लेड से टिड्डे का पैर काट रहा था। अचानक मेरा हाथ कट गया। मैंने तुरन्त ब्लेड फेंक दी। खून बहुत तेजी से निकल रहा था। जब सब लोगों ने देखा तो सब ठीक करने बैठ गए। जब ठीक करने लगे, तब बहुत दर्द हुआ। पहले तो मैं बहुत रोया। फिर सो गया। फिर कुछ दिन बाद मेरा हाथ ठीक हो गया।

● उत्सव पटेल, पहली, भोपाल, म. प्र.

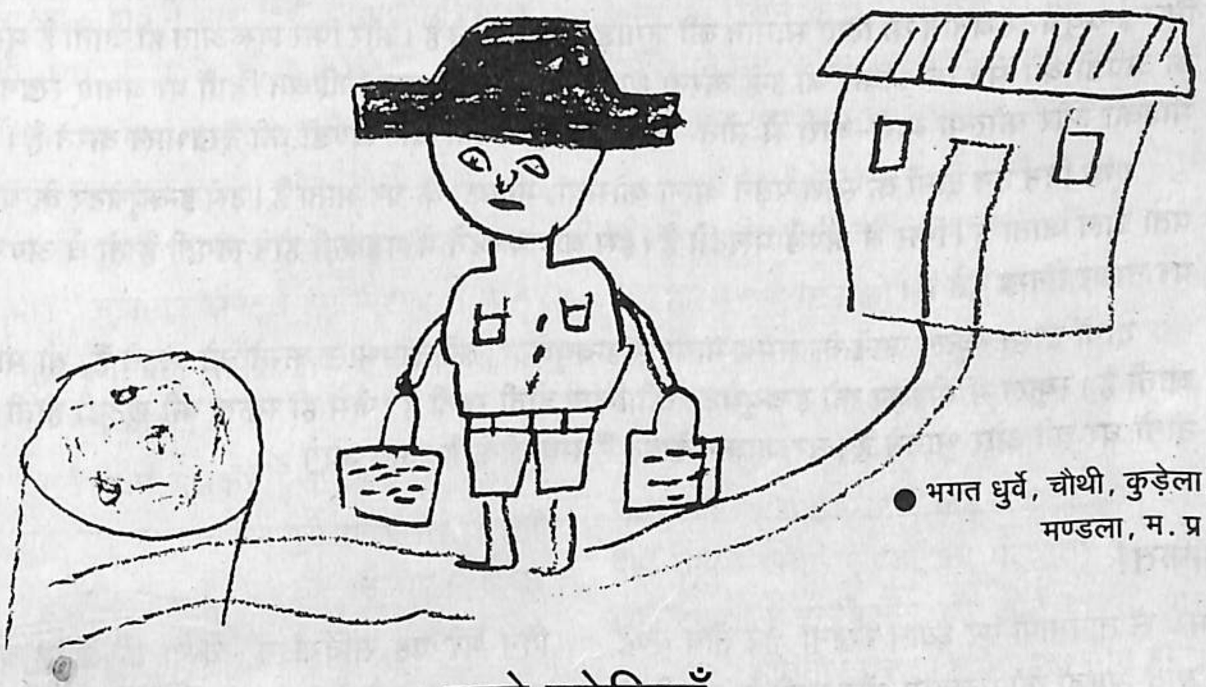

● भगत धुर्वे, चौथी, कुड़ेला, मण्डला, म. प्र.

बूझो पहेलियाँ

(1)

ढाई अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा-सीधा एक समान।
बिजली से दूँ रोशनी तुझको,
काँच का बना हूँ पहचानो मुझको।

(2)

तीन अक्षर का नाम है मेरा,
सभी जगहों पर है मेरा बसेरा।
प्रथम कटे 'ज्ञान' बन जाऊँ,
मध्य कटे तो जीत कहलाऊँ।

(3)

चलती रहती है टिक् टिक् टिक् टिक्
नहीं करती कभी भी विश्राम।
सभी घरों में है मौजूद रहती,
है समय बताना इसका काम।

(4)

ढाई अक्षर का मेरा नाम,
नहीं उल्टा-सीधा एक समान।
अच्छे बच्चे चाहें मुझको,
नाम बताओ तो जानूँ तुमको।

● मनप्रीत सिंह, 12 वर्ष, ललितपुर, उ. प्र.

प्यारा कुनबा

निकोलाई नोसोव

अब तक तुमने पढ़ा कि मीश्का हमेशा कुछ नया करना चाहता है। उसे मुर्गी-पालन नाम की एक किताब मिलती है। वह अपने दोस्त कोल्या के साथ इन्क्यूबेटर (मुर्गी के अण्डे को सेने वाली मशीन) बनाने की तैयारी करता है।

शुरू में कुछ अड़चनों को पार करने के बाद दोनों मिलकर गाँव से मुर्गी के ताज़े अण्डे लाते हैं। फिर इन्क्यूबेटर बनाने के लिए सामान की जुगाड़ भी कर लेते हैं। और फिर शुरूआत हो जाती है मुर्गी के अण्डों को सेने की। फिर जो इन्हें करना था वो था ताप को एक निश्चित डिग्री पर बनाए रखना। मीश्का और कोल्या बारी-बारी से सोते-जागते हैं। दोनों मिलकर अण्डों की देखभाल करते हैं।

एक दिन उन दोनों के साथ पढ़ने वाला कोस्त्या, मीश्का के घर आता है। उसे इन्क्यूबेटर के बारे पता चल जाता है। फिर वे अण्डे पलटते हैं। इस बार पलटने में गड़बड़ी होने लगती है तो वे अण्डों पर नम्बर लिख देते हैं।

दोनों दोस्त स्कूल जाने के समय माया से इन्क्यूबेटर की देखभाल करने को कहते हैं, वो मान जाती है। स्कूल में मीश्का को इन्क्यूबेटर की चिंता होती रहती है। जैसे ही स्कूल की छुट्टी होती है दोनों घर की ओर भागते हैं। घर जाकर देखते हैं सब ठीक है। अब आगे . . . .

आफत!

समय से तापमापी पर ध्यान रखना, हर तीन घण्टे के बाद अण्डों को पलटना और पानी के जल्दी से भाप बन जाने के कारण खाली हुई टंकी और लकड़ी की कटोरियों को फिर से भर देना, यही हमारा रोज़ का बँधा ढर्रा हो गया। यह कोई ऐसा काम तो नहीं था कि जिसे मेहनत का कहा जाए, लेकिन पूरे समय सावधान रहना पड़ता था, नहीं तो कुछ न कुछ ज़रूर हो जाता था – कभी पारा यकायक बढ़ जाता या कभी हम अण्डों को पलटना भूल जाते। सारा समय हमें इन्क्यूबेटर का ही ध्यान रखना पड़ता था।

मीश्का का काम सब से मुश्किल था, क्योंकि उसको रात में निगरानी रखना पड़ती थी। उसको पूरी रात की नींद कभी न मिल पाती थी, इसलिए दिन भर वह सर्दियों में मक्खी की तरह बेजान रहता था। खाने के बाद वह अक्सर रसोई-घर के टेबिल पर झपकी ले लेता और तब मैं अपनी चित्रकारी की कॉपी निकाल लेता और उसमें उसके चित्र बनाया करता।

पाँच दिन और पाँच रात यही होता रहा। छठे दिन स्कूल में घण्टे के ऐन बीच ही मीश्का को नींद ने घेर लिया। नदेज्दा वीक्तोरोव्ना ने उसको झाड़ लगाई और पूरी क्लास ने उसकी खिल्ली उड़ाई।

मीश्का को बेशक इससे बहुत दुःख हुआ। हर किसी को दूसरों की हँसी उड़ाने में मज़ा आता है, लेकिन अपनी ही खिल्ली उड़ना किसी को भी अच्छा नहीं लगता।

इससे भी बुरी बात यह रही कि उसी दिन

लड़कों को दिखाने के लिए मैं अपने बनाए चित्र ले आया था। उन्होंने झट पहचान लिया कि विभिन्न मुद्राओं में सोए हुए मीश्का के ही ये चित्र हैं – लेटे हुए, बैठे हुए तथा आधे खड़े हुए।

''तुम तो यार, पूरे कुंभकर्ण हो,'' त्योशा कूरोच्किन ने मीश्का से कहा।

''इसने तो दुनिया भर का रिकॉर्ड तोड़ दिया है!'' सेन्या बोब्रोव ने साथ दिया। ''अफीमचियों की तरह ऊँघता रहता है, चौबीसों घंटे!''

चित्र एक हाथ से दूसरे हाथ में जाते रहे। हर कोई मजेदार बातें करता और ज़ोरों से हँसता।

''ये बेवकूफी भरे चित्र यहाँ लाने की तुम्हें क्या पड़ी थी?'' मुझ पर झपटते हुए मीश्का ने पूछा।

''मुझे क्या पता था कि इन्हें ये इतने मज़ेदार लगेंगे?'' मैंने कहा।

''तुमने जान-बूझकर ऐसा किया है, जिससे पूरी क्लास मेरी खिल्ली उड़ाए। अच्छे दोस्त रहे तुम। आगे से मैं तुम्हारे साथ कोई वास्ता नहीं रखूँगा।''

''मीश्का, कसम से, यह काम मैंने जान-बूझकर नहीं किया। ईमान से, नहीं। अगर मुझे पहले से मालूम होता कि ऐसा होगा तो मैं कभी तुम्हारा चित्र नहीं बनाता।'' मैंने कहा।

लेकिन दिनभर मीश्का ने मुझसे बात नहीं की। शाम को उसने कहा, ''अच्छा हो कि इन्क्यूबेटर को अपने घर ले जाओ और मेरे भद्दे चित्र बनाने की बजाय खुद रात में निगरानी का काम करो।''

''मुझे कोई इन्कार नहीं,'' मैं बोला। ''तुमने पाँच रात निगरानी की, अब मेरी बारी है।''

हम इन्क्यूबेटर को मेरे घर ले आए। और अब मुझ पर मुसीबत आना शुरू हो गई। हर रात मैं अपने तकिए के नीचे अलार्म घड़ी रखता, जो आधी रात को ठीक मेरे कानों में टनटना उठती। मैं जाग उठता और रसोई -घर में लड़खड़ाता हुआ जाता, वहाँ ताप देखता, अण्डों को पलटता और फिर लड़खड़ाता हुआ बिस्तर की ओर वापस आता। आमतौर पर तो मुझे पहले नींद ही नहीं आती, लेकिन कहीं ज़रा-सी झपकी लगी कि उसी क्षण फिर अलार्म घड़ी यों टनटना उठती कि उसे चूर-चूर करने पर मैं उतारू हो जाता।

हर सवेरे जागते समय मैं इतनी सुस्ती महसूस करता कि बस उठा न जाता। आधी नींद में ही कपड़े पहनने लगता और अपने को सिर पर से पजामा खींचते हुए या कमीज़ की बाँहों में पैर घुसेड़ते हुए पाता था। एक

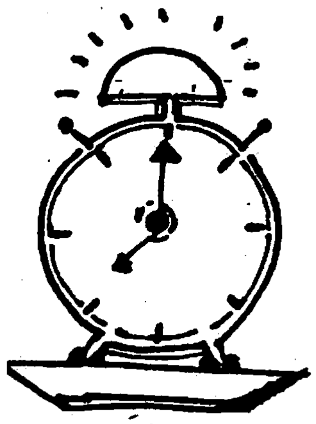

दिन तो मैंने अपने जूते ही उलटे पहन लिए। लड़कों ने देख लिया और मेरी इतनी खिल्ली उड़ाई कि क्लास में पाठ के बीच में ही मुझे जूते ठीक से पहनना पड़े।

लेकिन सबसे बड़ी आफत दसवीं रात को आई। कह नहीं सकता कि यह कैसे हुआ, मैं घड़ी में चाभी भरना भूल गया या अलार्म बजने पर भी मैंने नहीं सुना। कुछ भी हो, रात को मैं जो सोया, तो एकदम सवेरे ही जागा। आँखें खोलकर मैंने देखा, तो दिन काफी चढ़ चुका था। पहले मैं समझ नहीं सका कि क्या हुआ, लेकिन तभी मुझे याद आया कि मैं रात में एक बार भी नहीं उठा। बिछौने से कूदकर मैं इन्क्यूबेटर के पास लपका। तापमापी का पारा 37 डिग्री पर था। जितना होना चाहिए था, उससे पूरे दो डिग्री कम। जल्दी-जल्दी मैंने दो कापियाँ लैंप के नीचे ठूँसी। लेकिन मन में मुझे पता था कि इससे कुछ होना-जाना नहीं है। अब तक अण्डे पूरी तरह से ठण्डे पड़ गए होंगे।

दस दिन के कठिन परिश्रम पर पानी फिर गया। अण्डों के अन्दर भ्रूण अब तक काफी बड़े हो गए होंगे, लेकिन हाय! मेरे निकम्मेपन ने सब सर्वनाश कर दिया।

मुझे अपने पर इस कदर गुस्सा आया कि मैंने अपने ही सिर पर घूँसा जमाया। धीरे-धीरे पारा चढ़ने लगा और 39 डिग्री पर पहुँच गया। उसे देखते हुए दुखी मन से मैं सोचने लगा, "देख, पारा बिल्कुल ठीक है। ऊपर से अण्डे बिल्कुल पहले जैसे ही दिखाई देते हैं। लेकिन अन्दर, हाय! उनका सर्वनाश हो चुका है और अब चूज़े निकलने की कोई आशा नहीं।"

फिर भी, कौन जाने, शायद कुछ भी नुकसान नहीं हुआ हो। शायद भ्रूणों को नष्ट होने का समय ही न मिला हो। इसका पता कैसे लगेगा? अकेला तरीका यही था कि अण्डों को गरमी देते रहें और अगर इक्कीसवें दिन चूज़े न निकलें तो समझ लें कि वे मर गए। हो सकता है कि वे अभी जीवित हों। लेकिन इसका पूरा पता ग्यारह दिन बीतने पर ही चलेगा।

"हाय, हमारा प्यारा कुनबा यहीं खत्म हो गया" मैंने दुखी होकर सोचा। "बारह नन्हे चूज़ों की जगह एक भी न होगा।"

इसी क्षण मीश्का अन्दर आया। उसने तापमापी की ओर देखा और आनंद से बोला, "वाह! एकदम सही ताप। सब कुछ ठीक चल रहा है। अब मेरी रात-पाली है।"

"नहीं," मैंने कहा। "अच्छा रहेगा कि मैं ही करता रहूँ। तुम बेकार क्यों तकलीफ उठाते हो?"

"बेकार क्यों?"

"मान लो कि चूज़े न ही निकलें?"

"ठीक, मान लिया कि न निकलें, तब तो तुम्हें भी इतना काम करने की क्या ज़रूरत है? देखो हम दोस्त हैं सो हम दोनों को अपने-अपने हिस्से का काम करना चाहिए।"

मैं कुछ उत्तर न दे सका। अपना अपराध स्वीकार कर लेने का साहस मुझमें नहीं था। इसीलिए चुप रहने का ही मैंने निश्चय किया। मैं जानता हूँ कि यह ठीक नहीं था, लेकिन इसके सिवा कोई चारा भी नहीं था।

(अगले अंक में जारी)

सभी चित्र : सौरभ दास

जादुई कार्ड

एक वर्गाकार कागज़ ले लो। कागज़ कोरा और थोड़ा मोटा हो।

अब किसी भी एक किनार के बिल्कुल बीच में एक निशान बना लो। इस किनार के ठीक सामने वाली किनार के दो कोनों पर भी दो निशान लगा लो।

कोनों वाले इन निशानों से तकरीबन डेढ़-डेढ़ से. मी. ऊपर किनारों पर भी दो निशान लगाओ। (**चित्र -1**)

बस अब इन सभी निशानों को एक सीधी रेखा खींचकर ऊपर के किनारे के निशान से मिला लो। (**चित्र -2**)

अब दोनों ओर की रेखाओं के बीच रंग भर दो। (**चित्र -3**)

इस कार्ड के बीच में एक पिन फँसा दो। पिन का नुकीला सिरा ऊपर की तरफ रखो।

अब पिन को नोंक की ओर से पकड़कर कार्ड को तेज़ी से घुमाओ।

क्या तुमने जो आकृति कार्ड पर बनाई थी, घूमते हुए कार्ड पर भी वैसी ही नज़र आ रही है?

घूमता हुआ चौकोर कार्ड कैसा लग रहा है?

चौकोर ही या.... ? है न जादुई कार्ड!

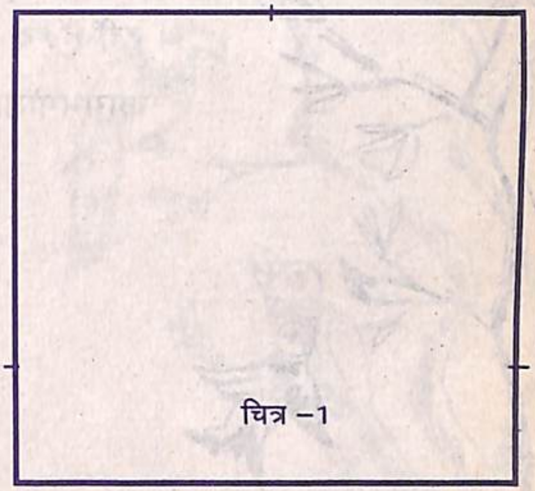

चित्र –1

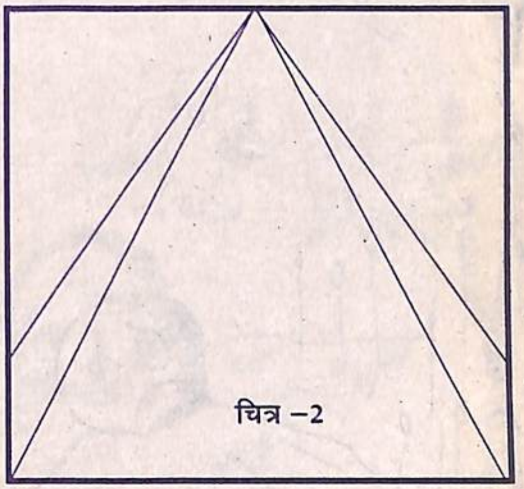

चित्र –2

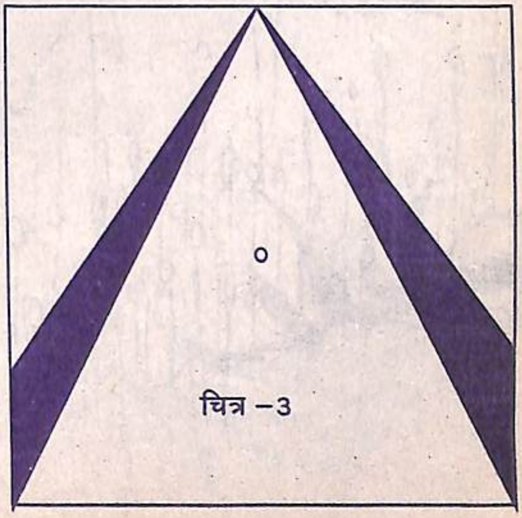

चित्र –3

कागभगोड़ा

डॉ. श्रीप्रसाद

(कागभगोड़ा खेत में खड़ा है। चिड़ियाँ इधर-उधर चहचहा रहीं हैं। वे कागभगोड़ा के कारण खेत में आने से डरती हैं।)

कागभगोड़ा : मैं क्या हूँ, मैं कौन
खड़ा हूँ ऐसे क्यों
बिल्कुल मनहूसों की तरह
खड़ा हूँ ज्यों

रात और दिन मैं
रखवाली करता हूँ
मैं अपने किसान से
कितना डरता हूँ

यदि चिड़ियाँ आ गईं
खेत में उड़ करके
मुझे फेंक देगा उखाड़
चुड़मुड़ करके

मगर अकेला मैं हूँ
मन में दुखी बड़ा
सूना-सूना, मैं बिल्कुल
चुपचाप खड़ा।

(कागभगोड़ा हिलता है और नाचने लगता है।)

कागभगोड़ा : आओ तोते और कबूतर
आओ चिड़ियों प्यारी
अभी किसान गया है घर को
फसल देखकर सारी

आओ, हम सब मिलकर नाचें
कोयल, गाओ गाना
गुटुर गुटुर गूँ करो कबूतर
मोर नाच दिखलाना

(कोयल कुहु कुहु गाने लगती है, तोता टें टें करता है, मोर नाचने लगता है और कबूतर गुटुर गूँ करने लगते हैं।)

कोयल : कुहू कुहू कू , कुहू कुहू कू
साथी आओ रे
कागभगोड़े बुला रहे हैं
खुशी मनाओ रे

आसमान कितना सुन्दर है
खुला खुला है रे
धरती का तन हरियाली से
धुला धुला है रे

सरसों के सुन्दर सागर में
मौज मनाओ रे
कुहू कुहू कू , कुहू कुहू कू
साथी आओ रे।

(सभी नाच रहे हैं। तभी किसान आता है। वह जोर से चिल्लाता है – ''हे ऽ ऽ ऽ'' और ढेला फेंकता है। सारे पक्षी उड़ जाते हैं। कागभगोड़ा चुपचाप खड़ा रह जाता है। किसान खेत में इधर-उधर घूमता है, फिर चला जाता है। कागभगोड़ा फिर सजीव हो जाता है।)

कागभगोड़ा : मेरे साथी चले गए सब
कैसे उन्हें बुलाऊँ मैं
कौन कहाँ होगा, अब उनको
कहाँ खोजने जाऊँ मैं

खुशी हुई थी मुझको कितनी
सारे साथी गए कहाँ
मैं दुखियारा खड़ा रह गया
अब फिर से चुपचाप यहाँ।

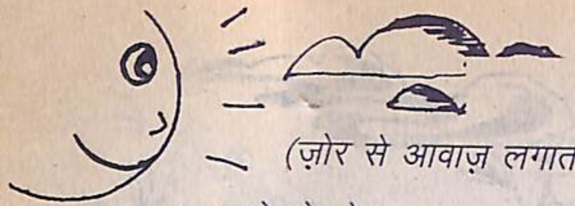

(ज़ोर से आवाज़ लगाता है)

आओ दोस्तो,
आओ कोयल,
मोर, तोते, कबूतर
सब आओ
किसान चला गया
हम फिर नाचें गाएँगे
मौज करेंगे।

(सब पक्षी फिर आते हैं। कागभगोड़ा नाचना शुरू करता है और कोयल गाती है।)

कोयल : अहा अहा, आहा आहा
कागभगोड़े जी के घर
हम सब साथी आए हैं
मौज मनाते हैं मिलकर

तोते, तुम भी गाओ रे
मोर पंख फैलाओ रे
अरे कबूतर, गुटुर गुटुर
अपनी बात सुनाओ रे

कितना अच्छा लगता है
आज मिले हैं हम सब फिर
आहा आहा अहा अहा
कागभगोड़े जी के घर
हम सब साथी आए हैं
मौज मनाते हैं मिलकर।

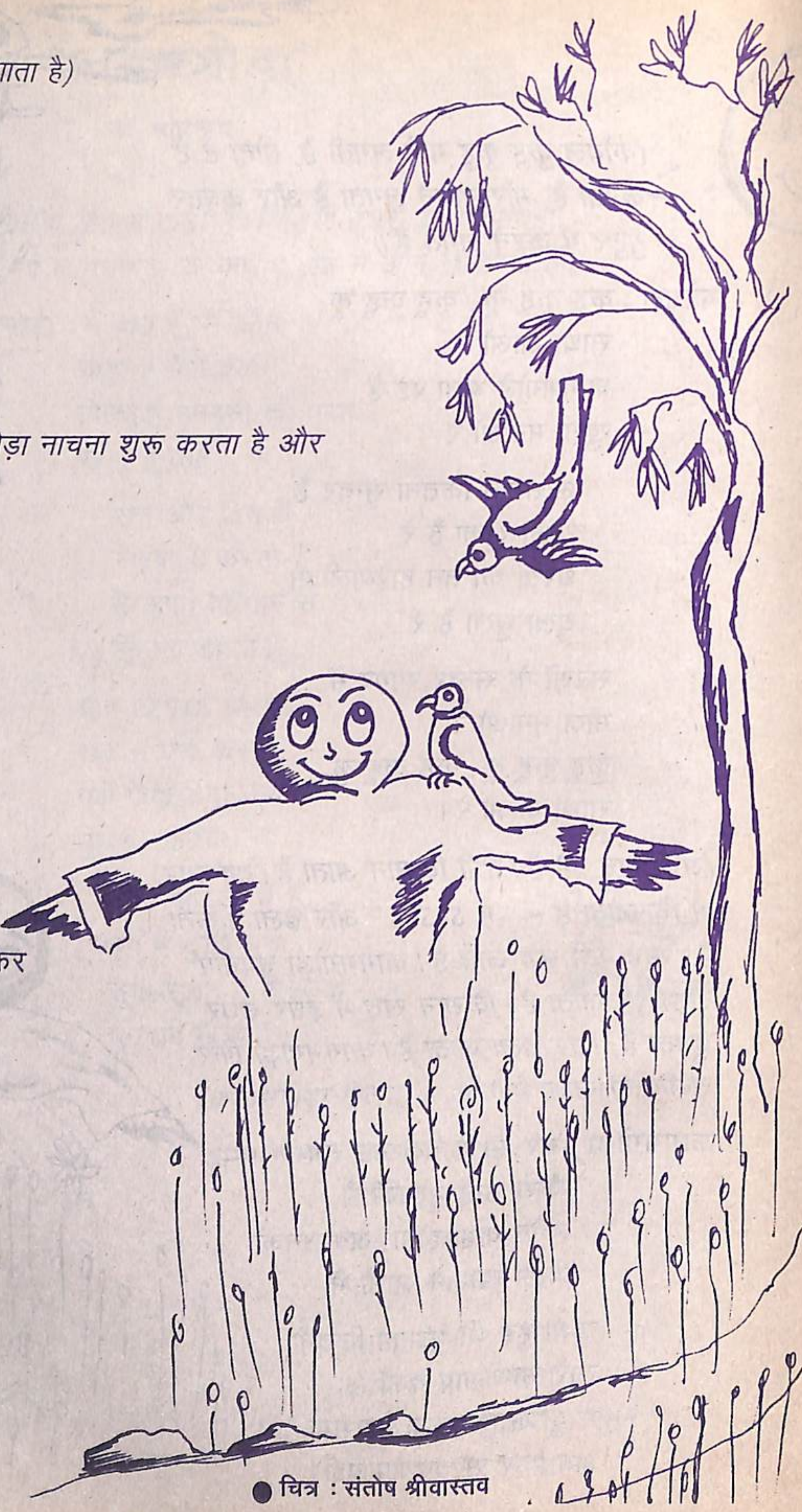

● चित्र : संतोष श्रीवास्तव

अच्छी नानी प्यारी नानी ...

इस शृंखला में इस बार हम 1960 में बनी 'मासूम' फिल्म का गीत लाए हैं। 'मासूम' एक गरीब परिवार की कहानी थी। परिवार में माता-पिता और तीन बच्चे (दो लड़के एक लड़की) थे। माता-पिता ने बच्चों को गरीबी में भी सम्मान के साथ रहना सिखाया था। एक हादसे में माता-पिता की मृत्यु हो जाती है। बच्चे एकदम अकेले रह जाते हैं। बच्चे मेहनत से कमाकर खाने में विश्वास करते हैं। दोनों भाई मिलकर अपनी छोटी बहन को खुश रखने की कोशिश करते हैं। इसी कोशिश के चलते एक अमीर परिवार जिनके यहाँ कोई बच्चा नहीं था, उनकी छोटी बहन को गोद ले लेता है। दोनों भाई अपनी बहन को खुश तो देखना चाहते हैं, लेकिन उससे दूर भी नहीं रह सकते। इसीलिए बार-बार उसे देखने पहुँच जाते हैं। उनका बार-बार आना उस अमीर दम्पति को पसंद नहीं आता। फिर वे दोनों अपनी बहन को छुप-छुपकर देखते हैं।

छोटी लड़की अपने नए माता-पिता के पास खुश है। एक दिन वह अपनी माँ को यह गाना सुनाती है। इस गाने को उस समय की नन्ही गायिका रानू मुखर्जी ने गाया है। छोटी लड़की की भूमिका हनी ईरानी ने निभाई थी। वो एक बहुत ही अच्छी बाल-कलाकार मानी जाती थीं। इस गीत में उन्होंने बहुत अच्छा अभिनय किया था। हनी ईरानी आजकल फिल्मों के लिए कहानी लिखती हैं।

इस फिल्म में और भी कई अच्छे गीत हैं। एक गीत *'ये हाथ ही अपनी किस्मत है, ये हाथ ही अपनी दौलत है, कुछ और तो पूँजी पास नहीं, ये हाथ ही अपनी हिम्मत है'* भी काफी लोकप्रिय हुआ था। इस फिल्म के गीत लिखे हैं शैलेन्द्र ने और संगीत दिया है हेमंत कुमार ने।

शैलेन्द्र

नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए
बाकी जो बचा वो काले चोर ले गए
नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए . . .

खाके पीके मोटे होके चोर बैठे रेल में
चोरों वाला डिब्बा कटके पहुँचा सीधा जेल में
नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए . . .

उन चोरों की खूब खबर ली मोटे थानेदार ने
मोरों को भी खूब नचाया जंगल की सरकार ने
नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए. . .

अच्छी नानी प्यारी नानी रूसा-रूसी छोड़ दे
जल्दी से इक पइसा दे दे तू कंजूसी छोड़ दे
नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए . . .

फिल्म : मासूम गायक : रानू मुखर्जी
गीतकार : शैलेन्द्र संगीतकार : हेमंत कुमार

GIANTS FROM THE BACKYARD

छोटे-छोटे कीड़ों की बड़ी प्रदर्शनी

क्या तुम हमारी इन बातों पर विश्वास करोगे?

- दो मीटर लम्बा एक टिड्डा घास पर बैठा अपनी बड़ी-बड़ी मूँछे हिला रहा है।
- एक मीटर लम्बी इल्ली अपनी पसंदीदा फूल-गोभी पर मुँह साफ कर रही है।
- बकरी के आकार का एक बिच्छू अपने भोजन को पकड़ने की तैयारी में है।

यह किसी डरावनी फिल्म का सीन नहीं है। यह दृश्य है आंचलिक विज्ञान केन्द्र, भोपाल में हो रही रोमांचक प्रदर्शनी का। जिसे तुम भी देख सकते हो। 'जायन्ट्स फ्रॉम द बेकयार्ड' नाम की यह प्रदर्शनी 7 अक्टूबर से 7 नवम्बर तक चलेगी। इस प्रदर्शनी को 'राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद' ने तैयार किया है।

इस प्रदर्शनी में हमारे आसपास पाए जाने वाले कीड़े-मकोड़ों को 200 से 300 गुना बड़ा करके बताया गया है। इन छोटे-छोटे जीवों को विशाल रूप में बहुत पास से चलते -फिरते, उड़ते-नाचते, लड़ते-झगड़ते देखा जा सकता है। इसके अलावा कीड़ों के बारे में जानकारी देने वाले खेल और प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया है।

तो अपने 'घर-आँगन के रहवासियों' को देखने आओगे न। ज़रूर आना और अपने सब दोस्तों को भी बताना।

जायन्ट्स फ्रॉम द बेकयार्ड
7 अक्टूबर से 7 नवम्बर 2000 तक
आंचलिक विज्ञान केंद्र, श्यामला हिल्स, भोपाल
समय - सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक

एक शाम पंछियों के नाम

किशोर पँवार

यूँ तो जाने-अनजाने हम अपने घर के आस-पास, खेतों पर, पेड़ों पर कई चिड़ियाँ देखते हैं। पर क्या कभी उनकी आदतों, रहन-सहन, खान-पान, उनकी दिनचर्या, पसन्दीदा पेड़-पौधों आदि पर ध्यान दिया है? इसी को तो कहते हैं - पक्षी निरीक्षण। नाम तो भारी-भरकम है परन्तु काम उतना भारी नहीं। बल्कि उलटे बहुत ही मज़ेदार काम है परिन्दों को देखना। यहाँ पढ़कर देखो, फिर बाहर खुले में जाकर खुद ही आज़माकर देखना...!

मेरे घर के आसपास पीपल, नीलगिरी, केसिया, सुबबूल व विलायती बबूल के पेड़ हैं। ये सभी खूब फूलते-फलते हैं। पेड़ और पक्षियों के सदियों से चले आ रहे रिश्ते के कारण सुबह से शाम तक इन पर तरह-तरह के पक्षियों का आवागमन चलता रहता है। दिन में तरह-तरह की मैनाएँ, तोते, बुलबुल, शकरखोरे और फ्लावर पेकर इनसे अपना दाना-पानी जुटाते हैं। दिन में तो ये हरे-भरे पेड़ लुभाते ही हैं, शाम को भी इनकी रंगत कम नहीं होती।

जो पेड़ दिन में हरे-भरे नज़र आते हैं, वे शाम ढलते ही हरे-सफेद और हरे-काले होने लगते हैं। सूरज के डूबते ही सैकड़ों की संख्या में सफेद-झक बगुलों की बारात चारों दिशाओं से आने लगती है, और देखते-देखते ये पेड़ रूई के सफेद बड़े-बड़े गोलों से ढक जाते हैं। पेड़ों के इस झुरमुट में कुछ को बगुले के और कुछ को कौए के पेड़ कहने में कोई हर्ज नहीं है। वैसे कुछ पेड़ मैनाओं के हवाले भी हैं। मैंने देखा कि बगुले अधिकतर पीपल या केसिया के पेड़ पर ही रात्रि विश्राम करते हैं। यहाँ सैकड़ों की तादाद में बगुले बैठते हैं। उन्हें पेड़ की डालों पर बैठते देखना कम रोचक नहीं है। जब वे आकाश में उड़ रहे होते हैं तो उनकी लम्बी गर्दन शरीर से सटी हुई, दोनों पैर पीछे की ओर सीधे मुड़े और शरीर से चिपके हुए होते हैं।

परन्तु जैसे ही वे पेड़ के पास आकर किसी शाखा पर बैठने के लिए नीचे उतरते हैं, तो उनके दोनों पैर हवाई जहाज़ के पहियों

की तरह धीरे-से खुलकर सीधे हो जाते हैं। और वे आकर डाली पर बैठ जाते हैं। इन्हें देखकर ऐसा लगता है कि सैकड़ों छोटे-छोटे सफेद हवाई-जहाज़ पेड़ों की शाखाओं पर लैंड कर रहे हों। हवाई-जहाज़ बनाने वालों ने निश्चित ही इन्हीं पक्षियों से प्रेरणा ली होगी। बैठते समय वे अपने पंख तब तक हिलाते रहते हैं जब तक कि वे अच्छी तरह से सन्तुलन की स्थिति में न आ जाएँ। पेड़ों से टेक ऑफ करते समय यानी उड़ान भरते समय वे अपने लम्बे पैरों को पीछे की ओर समेट लेते हैं।

शाम के पाँच बजे से पौने छह बजे तक जब बगुले नहीं आते, कौए नीलगिरी के पेड़ से पीपल के पेड़ पर आते-जाते रहते हैं। स्पष्ट है कि पहले कौए अपना डेरा जमा लेते हैं। नीलगिरी के पेड़ पर कौए ऊपर की टहनियों पर तथा पीपल पर नीचे और बीच की शाखाओं पर बैठ जाते हैं। पौने छह बजे तक इक्का-दुक्का बगुले आना शुरू कर देते हैं। इसी बीच आकाश में रोजी स्टारलिंग (तिल्यार) के झुण्ड भी यहाँ-वहाँ डोलने लगते हैं।

छह बजे के आसपास कौओं की संख्या काफी बढ़ जाती है। इस समय मैनाओं की चहल-पहल भी बढ़ जाती है। विलायती बबूल व नीम के पेड़ों पर इनकी संख्या धीरे-धीरे बढ़ती रहती है। इनकी चहचहाहट इतनी तेज़ होती है कि इसे शोर की श्रेणी में रखा जा सकता है।

साढ़े छह बजे के लगभग बगुलों के बड़े-बड़े झुण्ड पश्चिम और दक्षिण दिशाओं से आना चालू हो जाते हैं। पीपल की जिन शाखाओं पर कौओं ने अपना डेरा पहले जमा लिया था, उन्हें अब वहाँ से हटना पड़ता है। ऐसा ही बगुलों के साथ भी होता है। नीलगिरी की टहनियों से उन्हें हटना पड़ता है जिन्हें कौए अपना समझते हैं। ऐसा भी नहीं है कि बगुले आते ही जिस डाल पर बैठते हैं, उसी पर बैठे रहते हैं। वे वहाँ से इधर-उधर उड़कर किसी अच्छी डाल की तलाश करते हैं। फिर अपनी गर्दन समेटकर चुपचाप बैठ जाते हैं।

लगभग शाम सात बजे तक अधिकांश बगुले अपने चिर-परिचित पेड़ों पर जम जाते हैं। पीपल के पेड़ पर बगुलों के साथ ही सात-आठ श्वेत आयबिस भी बसेरा करती हैं। आयबिस देहाती मुर्गी से थोड़ा बड़ा पक्षी है, जिसे झीलों व तालाबों के किनारे लगे पेड़ों पर बैठा देखा जाता है। इसकी लम्बी चोंच व गर्दन दोनों पूरी काली होती हैं। बाकी का पूरा शरीर बगुले के समान सफेद। पूँछ के पीछे वाले हिस्से के पंख ज़रूर थोड़ी कालिमा लिए होते हैं। यह बड़ा सुन्दर पक्षी है जो पक्षी अभयारणों की शोभा है। यह पेड़ों पर साढ़े छह-सात बजे के बीच आते हैं। तब तक अधिकांश बगुले अपना डेरा जमा चुके होते हैं।

रात बीतने पर अलसुबह जैसे ये पक्षी आए थे। उसी तरह चले भी जाते हैं। सबसे पहले कौए और मैनाएँ कलरव करते हुए दाना-पानी की खोज में रवाना होती हैं। छह बजते-बजते सभी कौए अपने डेरे छोड़ देते हैं। जबकि बगुलों में अभी हलचल शुरू ही होती है। बगुले लगभग साढ़े छह के आसपास जाना शुरू करते हैं, और सात बजे तक सभी बगुले अपना डेरा त्याग देते हैं। ये आसपास के नदी-नालों व खेतों में कीड़े-मकोड़ों की तलाश में निकल जाते हैं।

उड़ने से पूर्व वे अपने पंखों को फड़फड़ाते हैं। ऐसा करते देख लगता है कि वे उड़ने के पूर्व वार्मिंग अप यानी गर्मी पैदा कर रहे हैं। कुछ बगुले तो अपनी बैठने की जगह से सीधे ही उड़ जाते हैं। परन्तु उनमें से कुछ अपने आसपास के उन पेड़ों पर बैठते हैं जो रात को कौओं के कब्जे में थे। थोड़ी देर के लिए वहाँ की ऊँची शाखाओं पर बैठकर अपने पँखों को सक्रिय कर आखरी टेक ऑफ करते हैं।

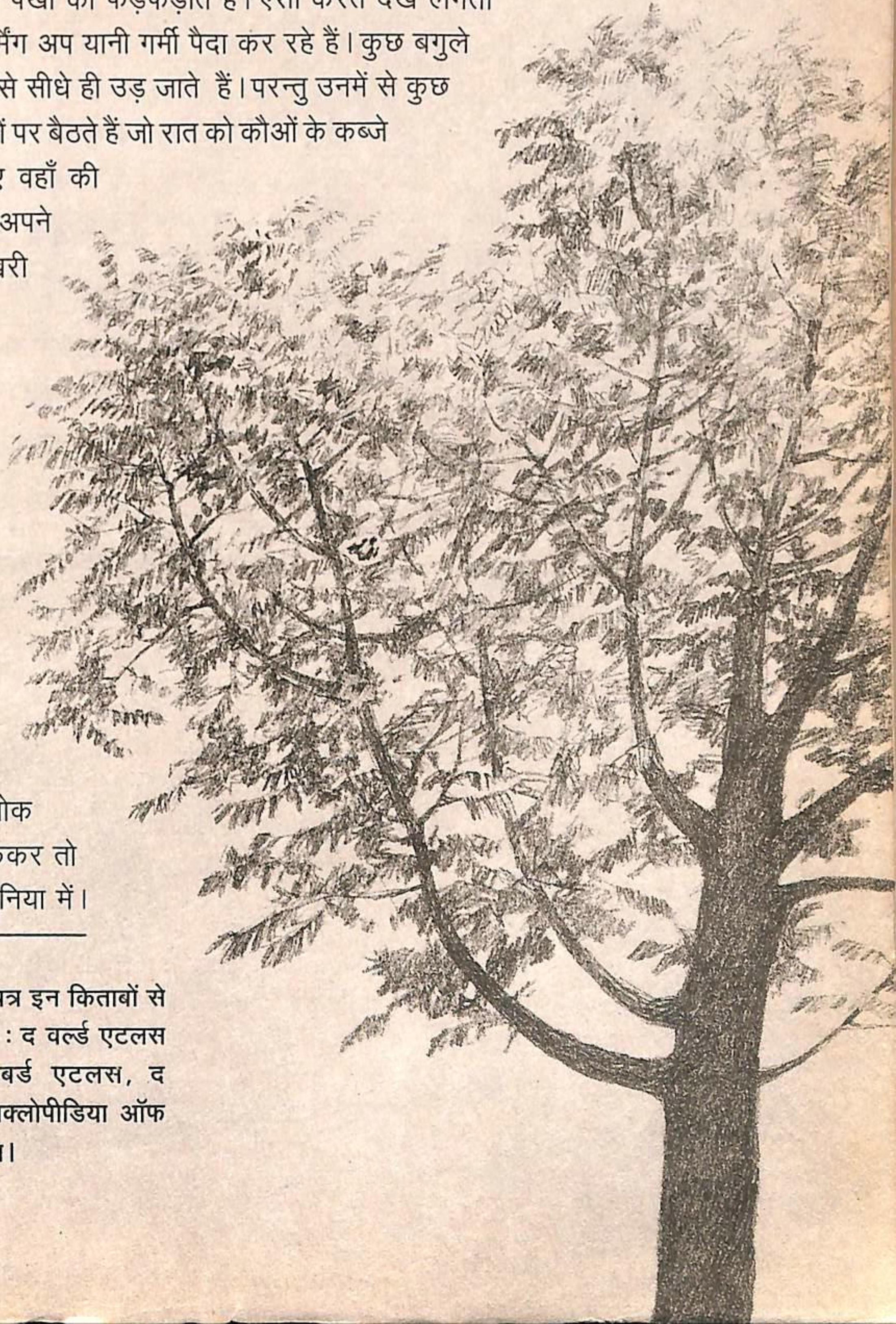

पेड़ों पर पक्षियों के आने-जाने, बैठने और फिर उड़ने का क्रम अनवरत चलता रहता है। चाहे हम देखें या न देखें। परन्तु यदि कभी समय निकालकर इनकी गतिविधियों को ध्यान से देखोगे तो बड़ा मज़ा आएगा। परिंदों की दुनिया का रोमांच भी किसी परीलोक से कम नहीं है। ज़रा झाँककर तो देखो एक नज़र इनकी दुनिया में।

इस लेख में आए चित्र इन किताबों से साभार लिए गए हैं : द वर्ल्ड एटलस ऑफ बर्ड्स, द बर्ड एटलस, द पिक्टोरियल एन्सायक्लोपीडिया ऑफ बर्ड्स एवं नेचर वॉच।

अक्टूबर का एक दिन

पहनी धरती ने हरियाली।
अक्टूबर की बात निराली॥

पीठ पे चढ़के आज दुपहरी।
छू ले! कह गई एक गिलहरी॥

भिन-भिन करता बोला भँवरा।
कलम और दे कागज़ कोरा॥

तितली कहकर गई कान में।
चलो यार बाहर आँगन में॥

कहे आम कँधे पर आओ।
मेरी डाली में छुप जाओ॥

हवा ने जब इक धक्का मारा।
नीम का देखो चढ़ गया पारा॥

मन तो मन बस्ता भी बोले।
यार! शाम मुझको क्यों खोले॥

पेड़, पँछी, पानी के रेले।
सब के सब इतराएँ खेलें॥

भरी छाँव ने जब भी चिमटी।
धूप बिगड़ कोने में सिमटी॥

धूल उड़ाती गइयाँ आईं।
शाम बेचारी और धुँधलाई॥

नदी में जब छपकाया पत्थर।
लहरें बोलीं आओ अन्दर॥

बरगद की ओली में जाकर।
सोया सूरज, रात बिछाकर॥

● सुशील शुक्ल
● चित्र : तरुणदीप गिरधर

कैलेण्डर का जादू

हमारे दैनिक जीवन में कैलेण्डर को एक अति आवश्यक वस्तु माना जाता है। प्रत्येक घर में, और यहाँ तक हर कमरे की दीवार पर एक कैलेण्डर विराजमान रहता है। दुकानों और कार्यालयों में भी कैलेण्डर के बिना काम नहीं चलता है। इसका उपयोग तीज-त्यौहार, तिथि, वार, अवकाश के दिन आदि देखने के लिए किया जाता है। कार्यालयों में बैठक आदि की तिथियाँ कैलेण्डर में चिन्हित की जाती हैं। घरों में रोज़मर्रा के हिसाब-किताब की जानकारी इसमें दर्ज़ की जाती है।

तुम लोग भी कैलेण्डर देखकर ज़रूर पता लगाते होगे कि स्कूल की छुट्टी कब-कब है, या राखी, होली, ईद, दीवाली का त्यौहार कब आने वाला है। कई बच्चे परीक्षाओं की समय सारणी भी कैलेण्डर पर लिखकर रखते हैं। विविध जानकारियों का समावेश करके कैलेण्डर को हम बहुउपयोगी बनाते हैं।

कैलेण्डर की तिथियों और वार के रिश्तों से तो तुम परिचित होगे ही। यदि तुम्हारे सामने सवाल रखा जाए कि महीने का पहला बुधवार 6 तारीख को पड़ता है तो चौथे बुधवार की तारीख क्या होगी? मुझे लगता है कि तुम सब फट-से एक साथ सही उत्तर बताओगे – 27 तारीख। क्योंकि एक ही वार को पड़ने वाली दो तिथियों के बीच सात दिन के अन्तर की बात तो तुम जानते ही हो, है न!

जिस प्रकार कैलेण्डर में सीधी पंक्ति में, यानी एक ही वार को पड़ने वाली तिथियों के क्रम में 7 के अंक से वृद्धि होती है उसी तरह तिरछी रेखाओं पर पड़ने वाली तिथियों में 6 व 8 के अंक से बढ़ोत्तरी होती है।

जैसे यहाँ सितम्बर माह की तारीखें देखो–

सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरू		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	29
शनि	2	9	16	23	30
रवि	3	10	17	24	

→ 6 का अंतर
→ 8 का अंतर
→ 7 का अंतर

कैलेण्डर में आँकड़ों की नियमितता के कारण उससे कई जादुई पहेलियाँ बनाई जा सकती हैं। एक महाशय – श्री पी. के. श्रीनिवासन ने तो इस बारे में एक मज़ेदार पुस्तक ही लिख डाली है। 1991 में चकमक में इसी किताब पर आधारित कुछ सामग्री भी दी गई थी। चलो कुछ और पहेलियाँ देखते हैं। देखें अपन से हल होता है या नहीं!

<u>पहली पहेली</u>

सबसे पहले किसी भी एक पंक्ति में आनेवाली 5 तिथियों के योग का सवाल। जैसे सितम्बर माह में नीचे से दूरी पंक्ति ले लो–

2 9 16 23 30.

शर्त यह है कि बिना कागज़, पेंसिल का उपयोग किए इन संख्याओं का झट-से जोड़ बताना है। यदि तुम 2+9+16... के तरीके से चलोगे तो समय लगेगा। और 10 सेकेण्ड से ज्यादा समय लगाने वाला तो 'आउट' हो जाएगा। तो फिर तरीका क्या है?

सबसे पहले देखो कि इस पंक्ति में सबसे बीच की संख्या कौन-सी है? हमारी पंक्ति है–

2 9 [16] 23 30

तो बीच की संख्या हुई 16. इस को 5 से गुणा कर दो। यानी 16 × 5 = 80.

अब ज़रा पंक्ति की पाँचों संख्याओं को जोड़कर

देखो कि जवाब 80 ही आता है कि नहीं। है न, कमाल की बात। चलो पता करें कि यह हुआ कैसे।

2 9 16 23 30

इस पंक्ति की संख्याओं की इस तरह जोड़ियाँ बना लो कि पहली और आखिरी संख्या की एक जोड़ी, दूसरी और चौथी की एक जोड़ी। फिर इन जोड़ियों का जोड़ लिखो–

2 + 30 = 32 = 16 + 16

9 + 23 = 32 = 16 + 16

और बीच की संख्या = 16

यानी पंक्ति की तिथियों का योग हुआ

16 + 16 + 16 + 16 + 16

या 16 × 5 = 80

दूसरी पहेली

यह तो रही पाँच संख्याओं वाली पंक्ति की बात। लेकिन अगर किसी पंक्ति में चार ही संख्याएँ हों तो क्या करोगे? जैसे सितम्बर माह की पहली पंक्ति –

4 11 18 25 का योग = ?

ज़रा दिमाग पर ज़ोर डालो। युक्ति तो वही है, बस थोड़ा-सा फर्क है। आया समझ में? पहली और आखिरी संख्या का योग 4 + 25 = 29.

पंक्ति का कुल योग 29 × 2 = 58

यानी चार संख्याओं वाली पंक्ति का योग निकालने का तरीका है पहले के तरीके से बनी जोड़ियों में से किसी भी जोड़ी के जोड़ का दुगुना कर लो।

अंतिम पहेली

किसी भी कैलेण्डर में 9 संख्याओं को घेरते हुए एक वर्ग बना लो। जैसे सितम्बर के कैलेण्डर में –

				1	2	3
4	5	6	7	8	(9)	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

इसमें बीच की संख्या 9 है। तो बताओ इन सब संख्याओं का जोड़ क्या होगा? कोशिश करो। वही तरीका अपनाना है, पर थोड़ा अलग।

झट-पट का तरीका यह है कि बीच की संख्या से 9 का गुणा कर दो। यानी वर्ग की सभी संख्याओं का जोड़ है – 9 × 9 = 81.

देखो 1 + 2 + 3 + 8 + 9 + 10 + 15 + 16 + 17 = 81, है न!

पर यह हुआ कैसे? उसी पुराने तरीके से। अपने द्वारा चुने गए वर्ग के बीच की संख्या के आजू-बाजू की संख्याओं को जोड़ीदार मानकर उन्हें जोड़ लो। इस तरह –

1 + 17 = 18 = 9 × 2

2 + 16 = 18 = 9 × 2

3 + 15 = 18 = 9 × 2

8 + 10 = 18 = 9 × 2

और बीच की संख्या = 9

यानी कुल संख्याओं का जोड़ = 9 × 9.

है न मजेदार खेल!

तो अब कैलेण्डर से खुद भी इस तरह की और पहेलियाँ ढूँढो और अपना व अपने दोस्तों का मन बहलाओ। हमें भी ज़रूर लिख भेजना।

संदर्भ (मराठी) के अंक–1 में प्रकाशित संजीवनी कुलकर्णी के लेख 'कैलेण्ड़र मधली जादू' से अनूदित। रूपांतरण – सुधा हर्डीकर

इस बार

क्रिकेट

क्रिकेट हमारा राष्ट्रीय खेल नहीं है, पर वह हमारे यहाँ जितना लोकप्रिय है उसे देखकर किसी को भी उसके राष्ट्रीय खेल होने का भ्रम हो सकता है। आजकल तो क्रिकेट एक और कारण से भी चर्चित है, वह है मैच–फिक्सिंग। बहरहाल. . . .। क्रिकेट है तो रोमांचक खेल। उसके एक दिवसीय स्वरूप ने उसे और रोमांचक बना दिया है। आजकल तो टेलीविज़न पर उसका सीधा प्रसारण भी होता है। सैकड़ों साल पहले क्रिकेट खेलने वालों ने सपने में भी यह नहीं सोचा होगा कि एक दिन यह खेल पूरी दुनिया पर इस कदर छा जाएगा।

इतिहास के झरोखे से

चलो आज हम इसी क्रिकेट के इतिहास में झाँकते हैं। सबसे पहले क्रिकेट कब खेला गया होगा? इसके बारे में सिर्फ अनुमान लगाए जाते हैं। कोई कहता है अब से अंदाजन एक हजार साल पहले यह फ्रांस में खेला जाता था। ऐसा शायद इसलिए भी कहा जाता है क्योंकि क्रिकेट फ्रेंच भाषा का शब्द है। और यह भाषा फ्रांस में बोली जाती है। लेकिन ज्यादातर लोग प्रसिद्ध अंग्रेज़ी खेल पत्रिका 'विजडन' के मत को मानते हैं। इस पत्रिका के हिसाब से क्रिकेट का सबसे पुराना ज़िक्र 1300 ईसवी में मिलता है। उस समय के इंग्लैण्ड के शासक एडवर्ड प्रथम की अलमारी से जो सामग्री मिली, उससे यह मत बनता है।

1706 ईसवी में लिखी गई विलियम गोल्ड की कविता में भी क्रिकेट का उल्लेख मिलता है। कहते हैं शुरू-शुरू में क्रिकेट खेलने का खूब विरोध हुआ। कुछ शासकों ने तो क्रिकेट खेलने वालों को जेल तक में भी डलवा दिया था। वर्ष 1760 क्रिकेट की तारीख में खास है। इस साल इंग्लैण्ड में पहला क्रिकेट क्लब बना। इसका नाम था, 'हैम्बिलडन क्रिकेट क्लब।' इसने इंग्लैण्ड में क्रिकेट को मशहूर करने में खूब मदद की। इसके सत्ताईस साल बाद मशहूर मेलबोर्न क्रिकेट क्लब (एम.सी.सी.) बना।

गेंद, बल्ला, स्टम्प और नियम

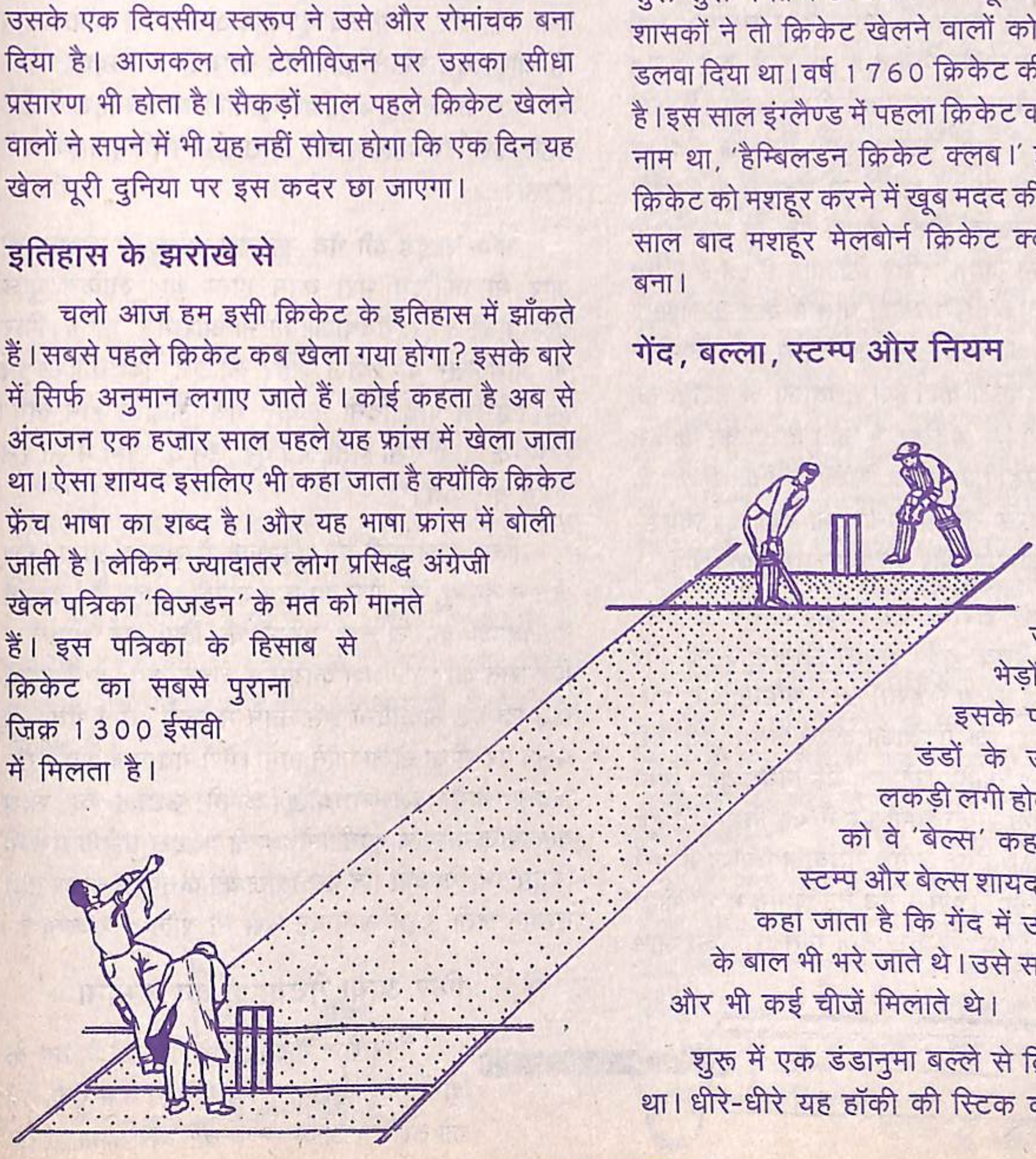

कहते हैं कभी स्टम्प के लिए पेड़ का उपयोग किया जाता था, तो कभी भेड़ों के बाड़े का। इसके फाटक में दो खड़े डंडों के ऊपर एक आड़ी लकड़ी लगी होती थी। इस लकड़ी को वे 'बेल्स' कहते थे। क्रिकेट के स्टम्प और बेल्स शायद यहीं से आए होंगे। कहा जाता है कि गेंद में उन दिनों आदमियों के बाल भी भरे जाते थे। उसे सख्त बनाने के लिए और भी कई चीजें मिलाते थे।

शुरू में एक डंडानुमा बल्ले से क्रिकेट खेला जाता था। धीरे-धीरे यह हॉकी की स्टिक की आकृति का हो

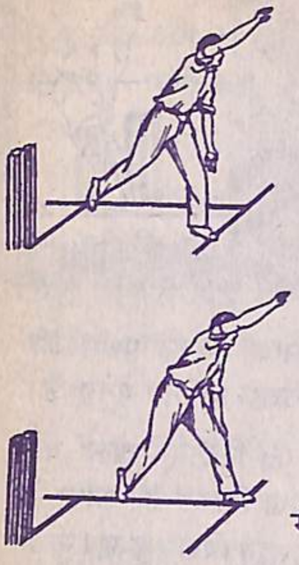

गया। इसके लिए पेड़ की चपटी-सी शाखा को काटकर भी बल्ले का काम लिया जाता था।

पहले निश्चित नियम भी नहीं थे। मैदान के छोर ही बाउंड्री होते थे। जितना बड़ा मैदान होता, उतनी ही बड़ी बाऊंड्री। क्रिकेट के शुरू होने के तकरीबन सौ साल बाद एक मोटी-मोटी माप से मैदान बनाए जाने लगे।

गेंद और गेंदबाज

गेंदबाजी पहले हाथ घुमाकर नहीं की जाती थी। जैसे पत्थर फेंकते हैं झटके से, वैसे ही गेंद फेंकी जाती थी। गेंदबाजी का यह तरीका उन्नीसवीं सदी के शुरुआती दिनों तक चलता रहा। गेंदबाज गेंद को बल्लेबाज के ठीक सामने झटके से पटकते थे। इसके कारण गेंद खूब उछाल लेती। इससे एक तो बल्लेबाजी करना मुश्किल हो जाता, दूसरे खिलाड़ियों को तेज गेंद से चोटें भी लगतीं। 1807 की बात है केंट के मशहूर तेज गेंदबाज थे, जॉन विल्स। एक मैच में जॉन विल्स ने हाथ घुमाकर गेंदबाजी की। इस गेंदबाजी के तरीके का इतना विरोध हुआ कि आखिर में जॉन विल्स को क्रिकेट से सन्यास लेना पड़ा। उन दिनों खिलाड़ियों की सुरक्षा के लिए आज की तरह साजो-सामान भी नहीं थे। ऊबड़-खाबड़ पिच के कारण और भी कठिनाई होती थी।

गेंदबाजी के तरीके पर विचार करने के लिए 1835 में एक बैठक हुई। लन्दन क्रिकेट क्लब और एम.सी.सी. क्रिकेट क्लब ने इसमें खास भूमिका अदा की। आखिर में तय हुआ कि गेंदबाजी करते समय हाथ कँधे से ऊपर नहीं जाना चाहिए। लेकिन यह नियम बहुत लम्बे समय तक नहीं चल सका। आखिर में यह नियम भी टूट गया। और गेंदबाजी करते समय गेंदबाज ज्यादा ऊँचाई से गेंदबाजी करने लगे। इससे गेंद को घुमाने में भी थोड़ी मदद मिलने लगी। गेंद भी कुछ तेज गति से फेंकी जाने लगी। लेकिन गेंद की तेज गति के कारण विकेट कीपर को खूब मुश्किलें आईं। विकेट कीपर के पीछे भी एक खिलाड़ी को खड़ा किया जाने लगा। लेकिन धीरे-धीरे विकेट कीपरों ने तेज गेंद को पकड़ने में भी महारत हासिल कर ली।

बल्ले-बल्ले बल्लेबाज!

तेज गेंद से बचने के लिए हेलमेट और पैड बने तो बल्लेबाजों को घायल होने के डर से निजात मिल गई।

अब वे गेंदबाजों को एक कदम आगे बढ़कर खेलने लगे। इस आक्रामक बल्लेबाजी से गेंदबाजों के लिए सही लाइन और दिशा से गेंदबाजी करना मुश्किल हो गया। एक ऐसा दौर आया जब गेंदबाज अपनी गेंद ऑफ स्टम्प से थोड़ा दूर रखते और गेंद लम्बाई से फेंकते। ऐसी गेंदबाजी के लिए 6 - 7 खिलाड़ी तक ऑफ साइड में खड़े रहते। इसलिए बल्लेबाज के आऊट होने की गुंजाइश बनी रहती।

ऑफ साइड की गेंद को लेग साइड में खेलना तो और भी जोखिम भरा काम होता था। लेकिन कुछ बल्लेबाजों ने इस गेंदबाजी को भी आराम से खेला। फिर भी अधिकतर बल्लेबाज बाहर की इन गेंदों को छोड़ने लगे। इससे पाँच दिनी क्रिकेट मैच ऊबाऊ होने लगे। कभी-कभी तो ऐसा होता जब पूरे दिन के खेल में सौ रन भी न बन पाते।

फिर बल्लेबाजी की तकनीक में सुधार आया। इस क्षेत्र में डब्ल्यू. जी. ग्रेस का नाम काफी मशहूर है। उन्होंने बल्लेबाजी को आसान बनाने के लिए नई तकनीक विकसित की। प्रशिक्षण कार्यक्रम चलने लगे। इंग्लैण्ड में कई क्रिकेट अकादमी इस काम में जुटीं। तेज गेंदों को बल्ले पर सीधा खेला जाने लगा। ऐसे गेंदबाज ओछी गेंद फेंकने लगे। जिससे बॉल काफी उछाल के साथ बल्लेबाज के पास आती। गेंदबाजी के इस तरीके पर भी नियम बना कि यदि गेंद बल्लेबाज की कमर के ऊपर तक उछाल लेती है तो अम्पायर उसे नो बॉल दे सकता है।

फिर आया गेंदबाजों का ज़माना

फिर तेज गेंदबाजों ने गेंद को विकेट के दोनों ओर घुमाना सीख लिया। अब एक गेंद जो तेजी से ऑफ स्टम्प की ओर टप्पा खाती,

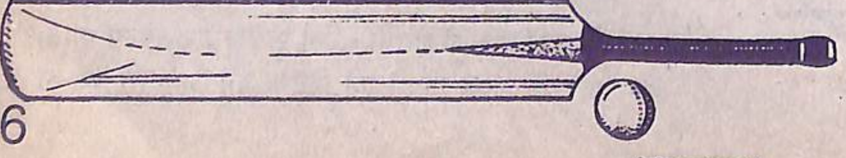

वह उछाल लेती लेग स्टम्प की ओर। कभी-कभी तेज गेंद लेग साइड यानी बल्लेबाज के पैर के लगभग पास गिरती और टप्पा खाने के बाद ऑफ स्टम्प ले उड़ती। कुछ गेंदें बिल्कुल बल्लेबाज के पैर के पास घूमती हुई गिरती है। जरा चूके कि सीधे बोल्ड आउट।

इसी समय धीमी गेंदबाजी का दौर शुरू हुआ। इसने भी बल्लेबाजों को छकाना शुरू किया। पहले 'गुगली' प्रकार की धीमी गेंदबाजी का आतंक छाया रहा। गुगली गेंद एक ऐसी गेंद होती है जो लगता है कि लेग साइड की ओर जाएगी, लेकिन टप्पा खाते ही यह एकदम ऑफ स्टम्प की ओर घूम जाती है। इस गेंदबाजी ने कई विकेट बटोरे। धीमी गेंदबाजी में दो और तरीके खूब मशहूर हैं, एक तो ऑफ स्पिन और दूसरा लेग स्पिन। खासकर भारतीय उपमहाद्वीप के देशों यानी भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका में ऐसे कई स्पिन गेंदबाज हुए। आगे कभी जब हम गेंदबाजी पर बात करेंगे तो इसका और भी खुलासा करेंगे।

लगातार बदलता क्रिकेट

इन सबके अलावा क्रिकेट में कुछ और खास परिवर्तन आए। जैसे अब बॉलिंग क्रीज थोड़ी बढ़ा दी गई। यानी स्टम्प से लेकर आगे की रेखा (जहाँ से गेंदबाज गेंद फेंकता है) के बीच की दूरी बढ़ा दी गई। इससे तेज गेंदबाजों की नो बॉल करने (नो बॉल तब भी दी जा सकती है जब गेंदबाज का एक पैर इस रेखा से आगे निकल जाता है) की गुंजाइश कुछ कम हो गई।

अब दो सौ रन बनने के बाद गेंदबाज दूसरी गेंद ले सकता है। इसका फायदा भी तेज गेंदबाजों को मिला। क्योंकि नई गेंद से तेज गेंदबाज आसानी से गेंद घुमा सकते हैं।

1924–25 में एम.सी.सी. ने छह की जगह आठ गेंद का ओवर रखने का प्रयोग किया। मगर यह असफल हो गया। आज भी छह गेंदों का ही ओवर होता है।

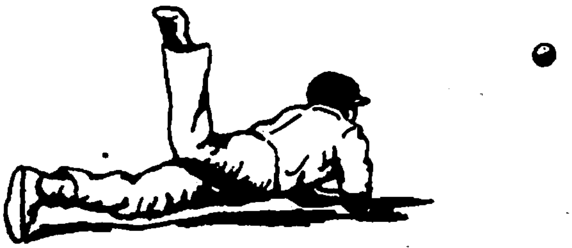

एशेज का किस्सा

सन् 1977 की बात है। इंग्लैण्ड और ऑस्ट्रेलिया के बीच क्रिकेट मैच हुआ। इस मैच में ऑस्ट्रेलिया की जीत हुई। कुछ अंग्रेज महिलाएँ इंग्लैण्ड की हार से बहुत दुखी थीं......। उन्होंने इसके विरोध में क्रिकेट स्टम्प की गिल्लियाँ जला दीं। इतना ही नहीं इन गिल्लियों की राख ऑस्ट्रेलियाई टीम को सौंप दी। उन्होंने इसे सम्भालकर रख लिया। राख को अँग्रेजी में 'ऐश' कहते हैं। तब से आज तक इंग्लैण्ड और ऑस्ट्रेलिया इसी राख यानी 'एशेज' के लिए मैच खेलते हैं। इस शृंखला को एशेज शृंखला कहा जाता है।

बीसवीं सदी का सबसे खास बदलाव एक दिवसीय मैच का शुरू होना रहा। पहला एक दिवसीय मैच ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैण्ड के बीच 1971 में खेला गया, जिसे ऑस्ट्रेलिया ने जीता। उसके बाद 1975 में क्रिकेट के एक दिवसीय विश्वकप मुकाबले शुरू हुए। तब से आज तक, हर चार साल में क्रिकेट के, एक दिवसीय मैचों की विश्वकप प्रतियोगिता हो रही है। विश्वकप होने के बाद से एक दिन के मैच पूरी दुनिया पर छा गए। इन एक दिवसीय मैचों ने पाँच दिनों के मैचों यानी टेस्ट क्रिकेट को लगभग खत्म-सा कर दिया है। आज सभी क्रिकेट विशेषज्ञ टेस्ट क्रिकेट को लोकप्रिय बनाने के लिए योजनाएँ बना रहे हैं। क्योंकि वे मानते हैं कि असल क्रिकेट टेस्ट मैच ही हैं।

तो ये था क्रिकेट के शुरू होने से आज तक के सफर का कुछ हिस्सा। क्रिकेट के बारे में तो तुम काफी कुछ जानते ही होगे। वैसे भी किसी एक ही अंक में क्रिकेट के सभी पक्षों पर चर्चा करना मुश्किल है। तुम सही सोचते हो... अभी तो न हमने इस पर बात की, कि मैदान की नापजोख क्या होती है? न क्रिकेट खेलने के नियम... न रनरेट के अजूबे तरीके, गेंदबाजी, बल्लेबाजी, रिकॉर्ड..। और भी कितना कुछ। लेकिन अगले किसी अंक में हम क्रिकेट पर और बातचीत करेंगे। हाँ क्रिकेट के बारे में इस लेख को पढ़कर यदि तुम्हारे मन में कोई सवाल हो तो ज़रूर लिखना।

● प्रस्तुति : सुशील शुक्ल

वर्ग पहेली – 111

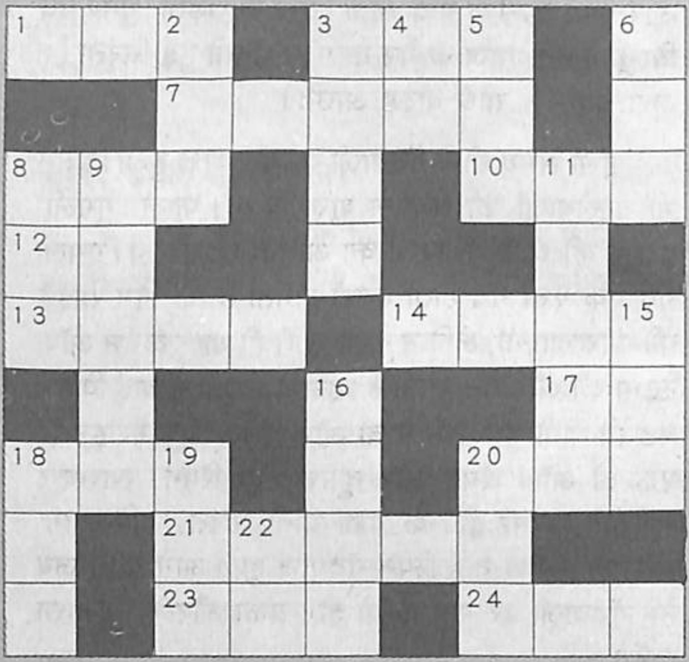

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. लोभ, किसी चीज़ को पाने की इच्छा (3)
3. बहुत अधिक दुख के सदमे में या बीमारी की बेहोशी में की गई ऊल-जलूल बातें (3)
7. हार, भात और म जोड़कर एक युद्ध के लिए मशहूर एक पौराणिक ग्रंथ का नाम (5)
8. एक प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक जिनके जन्मदिन पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है (3)
10. मनहर में ढूँढो पानी ले जाने का साधन (3)
12. ऊँचाई (2)
13. बाहर की दशा में ढूँढो राजा (4)
14. ऊपर तक भरा हुआ (4)
17. जबड़े के सबसे अन्दर वाले दाँतों को कहते हैं (3)
18. रगड़ खाकर रंग या पपड़ी निकल जाना (3)
20. शाम के समय दीया आदि जलाकर की जाती है, एक नाम (3)
21. कार पर आरोप की काट-छाँट में है दूसरों की भलाई के लिए किया गया काम (5)
23. खर्च किया गया या किसी चीज़ में लगाया गया पैसा (3)
24. नमी, गीलापन लिए हुए (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

2. मनचला की काट–छाँट में खोजो बगीचा (3)
3. सूर्य (4)
4. मुँह का पाचक रस (2)
5. अवनति, नीचे आना (3)
6. .... नगरी, चौपट राजा (3)
8. किसी चीज़ का, खासकर ज़मीन का क्षेत्रफल (3)
9. मरद दगा में है सहायता करने वाला (5)
11. एक पुलिस कर्मी (5)
15. किसी चीज़ की मात्रा ज़्यादा होना या प्रगति होना (3)
16. तीन ऐतिहासिक लड़ाइयों के लिए मशहूर एक जगह जो आज हरियाणा में है (4)
18. छुट्टा (3)
19. चंचल महिला भी और बिजली भी (3)
20. हाथ कंगन को................. क्या? (3)
22. बीमारी (2)

निर्मल कुमार गोयल, सालिमपुर अहरा, पटना, बिहार द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित

वर्ग पहेली – 111 का हल चकमक के दिसम्बर, 2000 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का दिसम्बर 2000 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

हमारे शिक्षक : 21

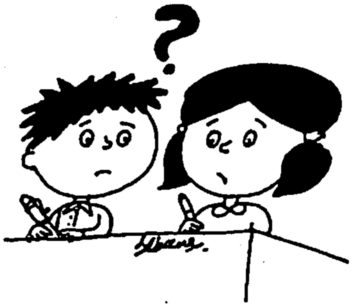

यह शृंखला काफी समय से छप रही है। इसमें तुम कई लोगों के स्कूली जीवन और शिक्षकों की बातें पढ़ चुके हो। अपने स्कूली जीवन की बातें सभी लोग एक-दूसरे को सुनाते हैं। यदि तुमने अभी तक अपने अनुभव नहीं भेजे हों तो जल्द भेजो। साथ ही अपने माता-पिता और बड़ों से कहो कि वे चकमक के लिए अपने शिक्षकों के बारे में लिखें।

मेरे शिक्षक

हम सबके जीवन में शिक्षकों का अपना एक विशिष्ट स्थान होता है, जो शायद माता-पिता भी नहीं ले सकते। बचपन से लेकर बड़े होने तक हमारे जीवन में कई शिक्षक आते हैं, पर उनमें से कुछ ही हमारे मन-मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ते हैं।

मुझ पर भी पढ़ाई के दौरान कुछ शिक्षकों का गहरा प्रभाव पड़ा है। इनमें से कुछ ने तो मेरी जीवन-शैली को ही बदलकर रख दिया। मैं अपने को भाग्यशाली ही कहूँगी कि मुझे अच्छे शिक्षकों का साथ ही ज़्यादा मिला।

याद रहे अनुभव

चलिए शुरुआत करती हूँ, माध्यमिक विद्यालय के कुछ यादगार अनुभवों से। हम सरकारी स्कूल में पढ़ते थे, जहाँ संस्कृत और अंग्रेज़ी की शुरुआत छठी कक्षा से होती थी। हमें ये दोनों विषय पढ़ाने वाली मैडम तीनों कक्षाओं में अच्छी मिलीं। जिसके कारण ये दोनों विषय मेरे मनपसंद विषयों में से हुआ करते थे।

मुझे अच्छी तरह याद है, जब मैं आठवीं में थी, तब अलग-अलग सेक्शन (विभाग) में अलग-अलग मैडम अंग्रेज़ी पढ़ाती थीं। एक सेक्शन की मैडम तो बहुत ही कड़क और गुस्से वाली थीं। वो बहुत तेज़ गति से पढ़ाती थीं। किसी भी एक बात को यदि एक बार समझा दिया तो बस, फिर चाहे बच्चों को समझ में आए या न आए। इस पर यदि किसी ने उसी बात को

दोबारा जानना चाहा तो जान लीजिए कि उसकी शामत ही आ गई। वो पढ़ाती ही नहीं लिखवाती भी उसी तेज़ गति से थीं। वो भी केवल मौखिक, ब्लैकबोर्ड पर नहीं। और तो और लिखवाते-लिखवाते बीच में से ही किसी को खड़ा करके पहले लिखाया हुआ पूछ लेतीं। उस समय लड़कियों के लिए अंग्रेज़ी लिखना इतना आसान न था, पर मैडम के डर के मारे लिखना तो पड़ता ही था। कई लड़कियाँ तो सिर्फ अंग्रेज़ी उच्चारण को ज्यों का त्यों हिन्दी में (what का व्हाट,that का दैट ..) लिखती थीं।

एक तरफ ये मैडम थीं। तो दूसरी ओर मेरी क्लास टीचर अमरजीत कौर मैडम थीं जो हमें अंग्रेज़ी पढ़ाती थीं। हमारी मैडम बहुत ही अच्छी थीं। हालाँकि वो भी अनुशासनप्रिय थीं, पर उनके पढ़ाने और समझाने के तरीकों के कारण ही अंग्रेज़ी और वो मैडम, दोनों ही हमें प्रिय थे। हम सभी को अंग्रेज़ी में अच्छे नम्बर आते थे। दूसरे सेक्शन की हमारी सहेलियाँ बड़ी दुखी थीं। पर हम इस मामले में अपने को नसीबोंवाले समझकर इतराते फिरते थे।

'टोपीवाले' सर

मिडिल स्कूल की चर्चा के दौरान यदि मैं देवलेकर सर का ज़िक्र न करूँ तो 'मेरे गुरुजी...' कुछ अधूरा-सा लगेगा। यही वो थे जिनके कारण मैं 'किताबी कीड़ा' बनने की बजाय अन्य गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती रही। मैं ये बात अर्न्तमन से स्वीकारती हूँ कि देवलेकर सर के कारण ही मेरी झिझक दूर हुई और अब मैं आत्मविश्वास के साथ कोई भी काम कर लेती हूँ।

छठवीं में मैं भी बाकी लड़कियों की तरह बड़ी संकोची और दब्बू थी। घर पर तो इतनी ऊधम मचाती थी कि सारे घर को अपने सिर पर ले लेती थी। मोहल्ले में भी अपनी दादागिरी चलाती थी। पर स्कूल जाते ही मैं एकदम सीधी-सादी लड़की बन जाती थी। तब स्कूल में कभी-कभी बहुत बुरा भी लगता था। जब देवलेकर सर हमारी कक्षा में आते तो हम बड़े खुश हो जाते कि आज फिर कुछ नया सीखने को मिलेगा। कभी कविता, कभी कहानी, कभी कठपुतली बनाना तो कभी नाटक करना। हर बार हमें कुछ न कुछ मज़ेदार सिखाकर ही मानते।

15 अगस्त, 26 जनवरी जैसे राष्ट्रीय त्यौहार देवास के सारे स्कूल मिल-जुलकर परेड ग्राउंड पर मनाते थे। हमारे स्कूल का डांस हमेशा ही कुछ हटकर होता क्योंकि उसे हमारे सर तैयार करवाते थे। अन्य छोटे-छोटे आयोजनों में भाग लेने को सर ने हमें हमेशा ही प्रोत्साहित किया। हमारे ये सर हमेशा ही टोपी लगाकर रखते थे। कई लड़कियाँ उन्हें 'टोपीवाले' कहती थीं, तो हमारी उनसे जमकर लड़ाई हो जाती थी कि हमारे सर को ऐसा नहीं कहो, वरना.... । हालाँकि वो सब भी मन से उनकी बहुत इज़्ज़त करती थीं।

देवलेकर सर के साथ हम कुछ लड़कियाँ पहले बम्बई और फिर बैंगलौर गई थीं। वहाँ हमने उन्हें एक अच्छे सर के साथ-साथ एक ज़िम्मेदार अभिभावक के रूप में महसूस किया। हमारे घर के लोगों को राज़ी करने के लिए वो सबके यहाँ अलग-अलग जाकर माता-पिता से मिले और उन्हें राज़ी कर ही लिया। आज सोचने पर लगता है कि सातवीं-आठवीं की लड़कियों को उनके घर से दूर अपनी ज़िम्मेदारी पर ले जाना कितना मुश्किल काम है। लेकिन हमारे अच्छे के लिए उन्होंने ये ज़िम्मेदारी भी ली। सच में देवलेकर सर जैसे अच्छे शिक्षक हर स्कूल में होना ही चाहिए। मैं तो हमेशा उनके सामने अपने आप को नतमस्तक ही पाऊँगी।

एक चहेती शिक्षिका बनना

मिडिल स्कूल में पढ़ाई पूरी करने के सात-आठ वर्षों बाद एक बार फिर उस स्कूल से वास्ता पड़ा। बी.एड. करने के दौरान अभ्यास शिक्षण (practice teaching) के लिए मुझे अपना यही स्कूल मिला। इतने समय में कई पुराने शिक्षक सेवानिवृत्त हो चुके थे। और कई नए आ गए थे। अमरजीत मैडम और देवलेकर सर तो उस समय भी थे। पहले तो मुझे बड़ा अजीब-सा लगा कि जहाँ हम पढ़े हैं वहीं खुद पढ़ाना!...। पर एक बार फिर अपने सारे शिक्षकों के प्रोत्साहन ने मुझे मजबूत बनाया और मैंने अपने सारे पाठ अच्छे से खत्म किए। मुझे याद है सारे शिक्षकों को मुझ पर गर्व था। वे कक्षाओं में भी इस बात को बड़ी खुशी के साथ कहते थे। उस समय मेरा भविष्य में शिक्षक बनने का फैसला और भी दृढ़ हो गया, क्योंकि मैं भी अपने शिक्षकों की ही तरह एक अच्छी और बच्चों की चहेती शिक्षिका बनना चाहती हूँ।

सबसे ज़्यादा ऊधमी

चलिए अब बढ़ते हैं मिडिल स्कूल से आगे की कक्षाओं की ओर। हमारी बारहवीं कक्षा में सभी लड़कियाँ विज्ञान समूह की थीं। जब हम ग्यारहवीं पास करके बारहवीं में गए तो हमारी कक्षा की क्लास टीचर (कक्षा अध्यापिका) बनने को कोई तैयार न था। कारण ये कि उनकी नज़र में हमारी कक्षा सबसे ज़्यादा ऊधम मचाने वाली थी।

उन दिनों हमारे स्कूल में तापकीर मैडम नई-नई आई थीं। हमारी कक्षा का कोई पूर्व अनुभव नहीं होने से वे हमारी क्लास टीचर बन गईं। हमारी पूर्व क्लास टीचर ने उन्हें आने वाले 'खतरों' से आगाह कर ही दिया था। उन्होंने इस काम को एक चुनौती के रूप में सहर्ष स्वीकार लिया। अपनी पहली कक्षा लेने के दौरान ही उन्होंने ये सब हमें बताया।

उन्होंने कहा था कि, ''पढ़ाई और अन्य सभी गतिविधियों में तुम्हें सबसे आगे रहना है। इसमें मैं हमेशा ही तुम्हारे साथ हूँ।'' उनका अध्यापन विषय रसायनशास्त्र था। जो कि बारहवीं की हर लड़की का पसंदीदा हो गया था। सच ही तो है, सही तरीके और रुचि के साथ पढ़ाया जाने वाला कोई भी विषय अच्छा ही लगेगा। तापकीर मैडम का व्यक्तित्व, बोलना, पढ़ाना, समझाना, हमारी हर छोटी-बड़ी मुश्किल को हल करने में मदद करना... सच में हर लड़की उनसे प्रभावित थी। पूरे साल भर हर प्रतियोगिता के लिए वही जुटकर

हमारी तैयारी करवातीं। और हम भी जी-जान लगाकर हर एक काम में अव्वल नम्बर लाकर ही मानते। हमारी मैडम हमें ही नहीं अन्य कक्षाओं की भी यथासम्भव सहायता करतीं।

एक बात गौरतलब है कि हमारी मैडम कभी निर्णायकगणों में शामिल नहीं होती थीं। फिर भी हर जगह हमारी कक्षा साल भर छाई रही। अंत में अब बारी थी पढ़ाई की... तो स्कूल के तब तक के इतिहास में पहली बार विज्ञान समूह का रिजल्ट 100 प्रतिशत रहा और इसकी खुशी मैडम को हमसे भी ज़्यादा हुई। उनकी मदद से ही तो हम अपनी बिगड़ी छवि को एकदम बढ़िया कर पाए थे।

मुझे लगता है हमारी कक्षा पहले भी इतनी खराब नहीं थी। पर तब हमारी बातों को कोई समझने को तैयार नहीं था। तापकीर मैडम ने ही हमारी मानसिकता को समझा और साथ ही हमें हर जगह प्रोत्साहित भी किया।

इसके बाद दौर शुरू हुआ कॉलेज की पढ़ाई का जहाँ शायद शिक्षकों से इतना लगाव नहीं हो पाता। स्कूली शिक्षा हमारे पूरे जीवन का आधार स्तम्भ होती है। इसी दौरान अच्छे शिक्षकों का सान्निध्य हमारे भविष्य में निखार ला सकता है।

● चेतना खरे, देवास

● चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

सितम्बर 2000 अंक के माथापच्ची के हल

1.

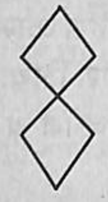

2. पहले 15 मिनट में 3तीन लोगों को एक आदमी खबर सुनाता है। यानी आठ बजकर पंद्रह मिनट पर 3+1 =4 लोग यह खबर जान जाते हैं। अगले 15 मिनट में यानी 8 बजकर 30 मिनट पर 4+3 X 3 =13 लोगों तक खबर पहुँच जाएगी। इसी तरह तुम हिसाब लगाओ। हमारे हिसाब से 10 बजकर 30 मिनट तक पूरा शहर यह खबर जान जाएगा।

3. 3 मकड़ी और 5 झींगुर।

4. इस तरह बनेंगे तीन वर्ग।

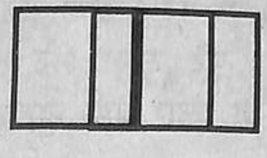

5. 225 मीटर

6.

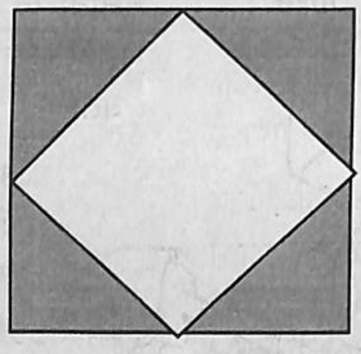

8.

42 X 138 = 5796
12 X 483 = 5796
18 X 297 = 5346
39 X 186 = 7254
48 X 159 = 7632

9.

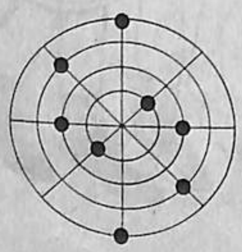

वर्ग पहेली 109 का हल

	क	वि		जौ		अं	बु	
अ		भा	त		प	शु		सु
ल			ना	ट	क			म
क	ल	र	व		ना	श	वा	न
	ह			सु			न	
सु	र	म	ई		प	द	र	ज
र			रा	गि	नी			ले
भि		श	क		र	वि		बी
	व	र		लौ		धू	न	

वर्ग पहेली 109 का सही हल भेजने वाले पाठक हैं – खुर्शीद अनवर राही, जावद, नीमच और प्रत्यूष, होशंगाबाद, **म. प्र.**। ईप्सा यादव, मथुरा और मनु पाण्डे, अल्मोड़ा, **उ. प्र.**।

इन्हें अक्टूबर, 2000 का अंक भेजा जा रहा है।

गणित की पहेलियाँ

॥ 1 ॥

गए बीनने
लकड़ी वन में,
लड़के तड़के चार।
बीस-बीस
किलो ढेर में,
लेकर आए भार।
उन्हें बेचने
गली-गली में
घूमे मारे-मारे।
दो रुपए प्रति किलो
बेचकर पाएँगे कितने सारे?

॥ 2 ॥

दो रुपए का
पेपर आता,
घर पर सुबह-सवेरे।
ताजी-ताजी,
खबरें पढ़ते,
सब सुबह-सवेरे॥
मई माह में
कितने पेपर,
आए सुबह-सवेरे।
कितने रुपए
हम देंगे,
गिन-गिन सुबह-सवेरे?

॥ 3 ॥

आई आँधी
गद्गद् भद्भद्
गिरे पेड़ से आम।
चार उठाकर
श्यामा भागी
तीन उठाकर राम॥
इन आमों की छः छः फाँकें
माँ ने फौरन करके।
दो-दो फाँकें
सबको बाँटीं
कितने जन थे घर में??

● गोपीचन्द श्रीनागर
● चित्र : सौरभ दास

माथापच्ची

(1)

यह तो तुम जानते ही होगे, कि एक ऊबड़खाबड़ जगह पर क्रिकेट खेलने के लिए मैदान तैयार करना कितना मुश्किल होता है। मैं और मेरे ग्यारह दोस्तों यानी कुल बारह लोगों ने ऐसा ही एक काम करने का सोचा।

काम शुरू करते-करते चार लोग भाग गए। और हमें इस काम को खत्म करने में तीन दिन लग गए। अगर वे चार लोग भी हमारे काम में हाथ बँटाते तो हमारा मैदान कितने दिन में तैयार हो जाता?

(2)

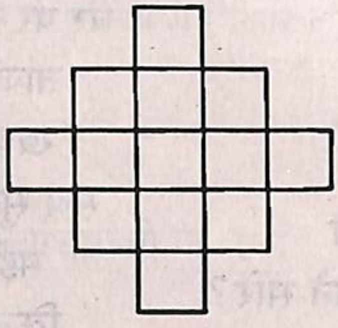

कई वर्गों से बनी इस आकृति को तीन जुड़ी हुई सीधी रेखाओं से इस तरह काटना है कि आकृति का हर वर्ग किसी न किसी रेखा से कट जाए। बहुत मुश्किल नहीं है, कोशिश करो।

(3)

एक बार तूफान आया। तूफान में एक अस्पताल की ऊँची इमारत से एक चीज़ गिरी। और उसके पाँच टुकड़े हो गए। इन टुकड़ों को देखने से तो पता नहीं चलता कि आखिर वह कौन-सी चीज़ होगी। हाँ अगर इस चीज़ के बारे में जानना है तो यहाँ दिए टुकड़ों को जोड़कर देखो।

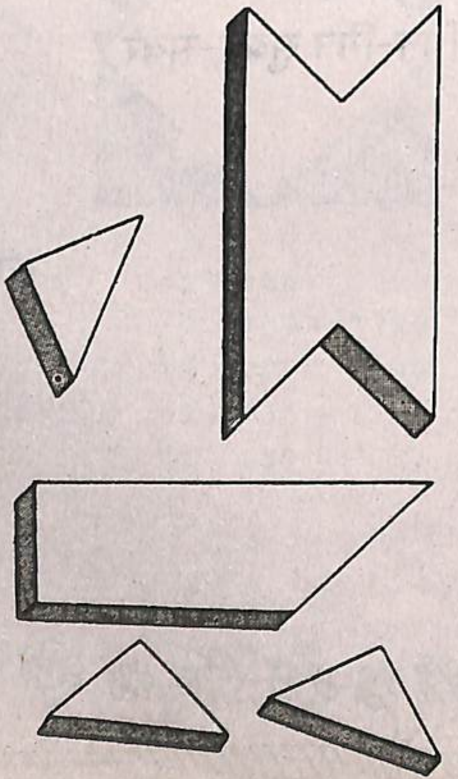

(4)

तीन सौ जामुनों को चार ढेरों में इस तरह बाँटना है कि पहले ढेर में जामुनों की संख्या दूसरे ढेर से दुगुनी रहे। तीसरे ढेर में दूसरे ढेर की नौ गुनी और चौथे ढेर में दूसरे ढेर से अड़तालीस गुनी।

अगर तुमने शर्त के हिसाब से चार ढेर बना दिए तो चौथा ढेर तुम्हारा!

(5)

एक टेलीफोन लाइनमेन ने 16 खम्भे जमाकर दो वर्ग बनाए। एक बड़ा वर्ग 12 खम्भों से और एक छोटा वर्ग 4 खम्भों से। फिर उसे कुछ सूझा। इस बार उसने 4 खम्भों की स्थिति बदलकर एक नई आकृति बनाई। इस नई आकृति में तीन वर्ग बन रहे थे। चलो हम लोग खम्भों की जगह सोलह माचिस की तीलियों को जमाकर देखते हैं कि क्या ऐसा सम्भव है।

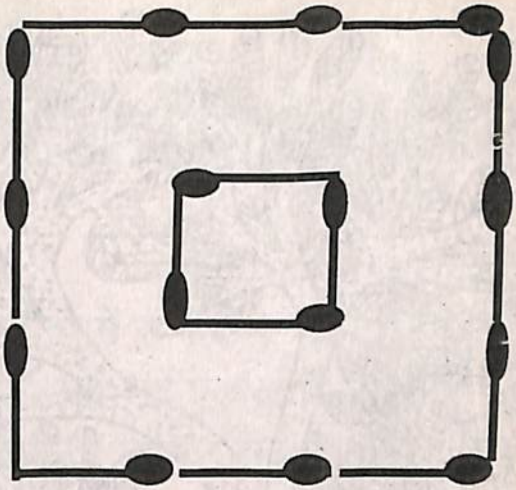

(6)

मुझे एक महाशय मिले। वो इस बात से बहुत परेशान थे कि उनके नक्शे का एक हिस्सा कहीं गिर गया है। मैंने इस नक्शे को देखकर इसके टूटे हिस्से के पाँच नमूने तैयार किए हैं। इन पाँचों में से एक उन महाशय ने लिया और अपने नक्शे को पूरा कर लिया। क्या तुम बता सकते हो कि इन पाँचों में से कौन-सा हिस्सा उनके नक्शे को पूरा करता है?

(7)

गणित में नौ दो तो ग्यारह होते ही हैं। पर क्या कोई और ऐसी चीज़ भी है जिसमें ग्यारह और दो एक होता है?

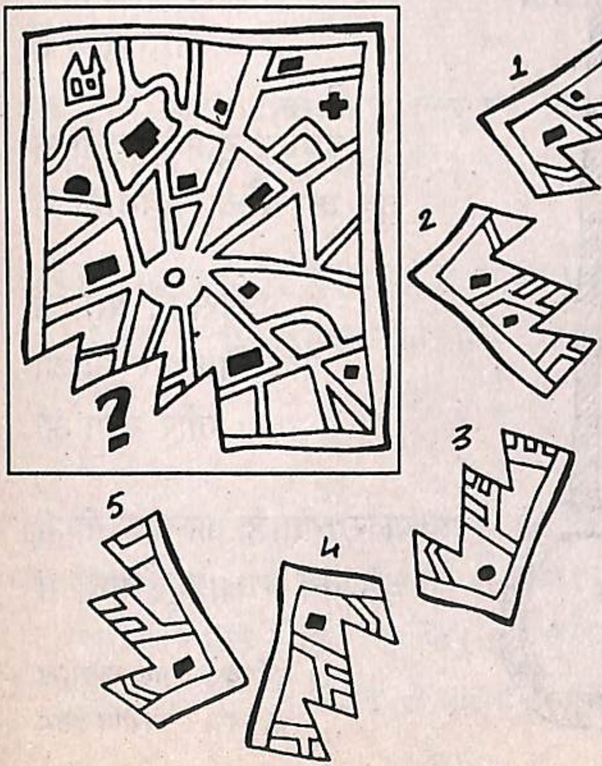

(8)

मुझे जानवरों के साथ खेलने में बड़ा मज़ा आता है। और जानवर भी मेरे साथ खूब खेल करते हैं। देखो न, अभी वे सब के सब नीचे दिए इन वाक्यों में छुपकर बैठ गए हैं। क्या तुम उन्हें ढूँढने में मेरी मदद करोगे?

1. दरवाजे को बन्द रहने दो।
2. हमारी मुलाकातें दुआ से शुरू होती हैं।
3. सीता और सिया रतनपुर गईं हैं।
4. सुनील गायक बनने बम्बई गया है।

● हिरावन कुमार वर्मा, बिनौरी, रायपुर, म. प्र.

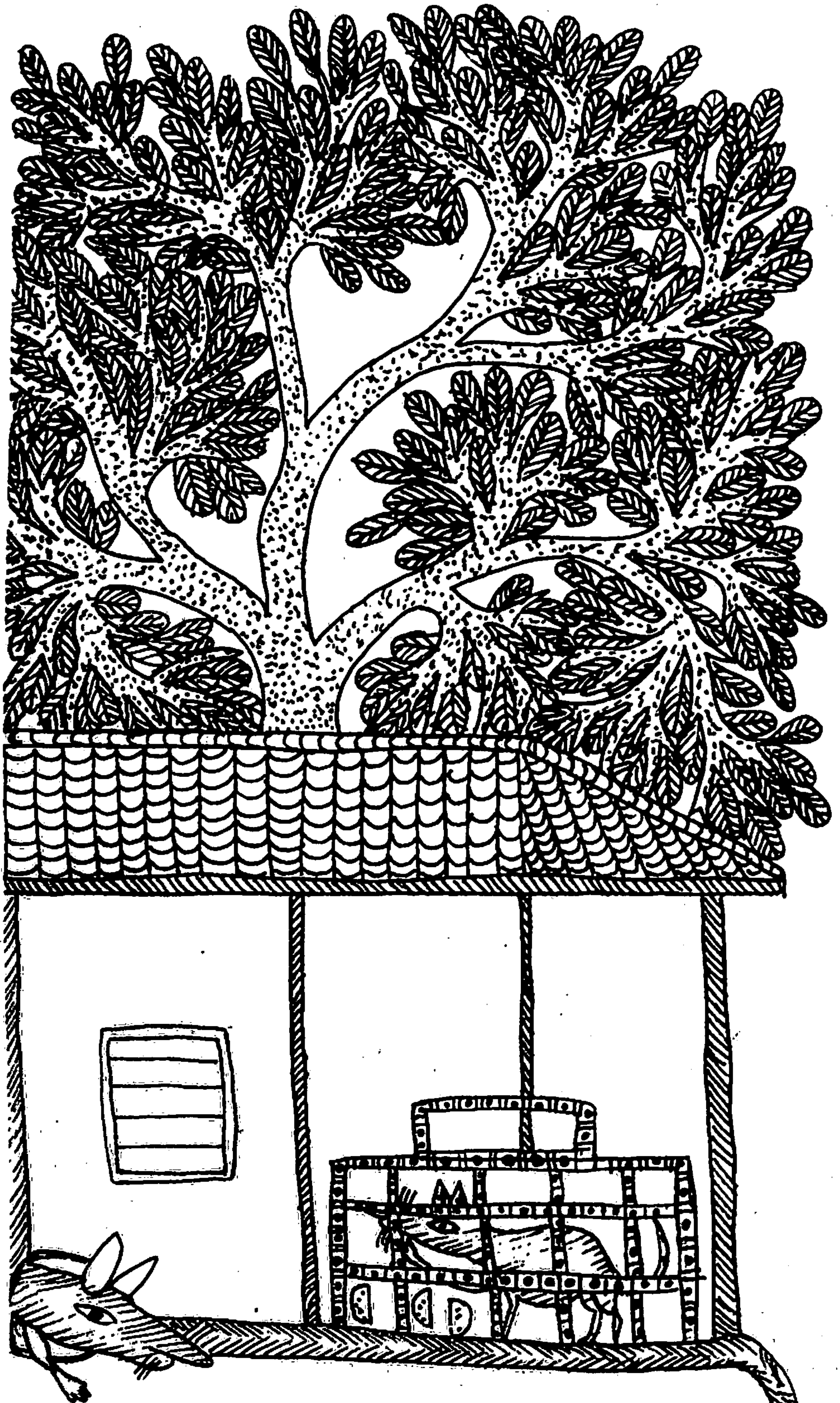

चूहेदानी

चूहा है बिल में
बड़ी मुश्किल में
चूहे का बच्चा चूहेदानी में

चूहे का बच्चा चूहेदानी में
छोटा-सा मुखड़ा
खाने गया था
रोटी का टुकड़ा

यूँ फँस गया नादानी में
चूहे का बच्चा चूहेदानी में

अब क्या करे वह
सोच रहा है
मूँछों को अपनी
नोच रहा है

दुबका हुआ हैरानी में
चूहे का बच्चा चूहेदानी में

उसको बताओ
सब मिलकर आओ
ज़ोर लगाओ

क्या रक्खा है आनाकानी में
चूहे का बच्चा चूहेदानी में

● सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
● चित्र : परसाद सिंग

पुतली बनाओ

पुतलियों के खेल तो तुमने कई देखे होंगे। बल्कि तुममें से कई ने पुतलियों के खेल दिखाए भी होंगे। ये खेल दिखाने के लिए नई-नई पुतलियाँ अगर खुद बनाई जाएँ तो क्या बात है। हर बार नया खेल, हर बार नई पुतली। यहाँ हम एक तरह की पुतली बना रहे हैं। तुम भी साथ में बनाओ।

इसके लिए एक माचिस का खाली खोखा, थोड़ी पतली रस्सी या मोटा धागा और पुतली के कपड़े के लिए कपड़े की चिंदियाँ जुगाड़ लो।

चित्र–1

सबसे पहले माचिस की डिब्बी के एक तरफ दो सींकों को क्रास की तरह लगाकर बाँध दो। (चित्र-1)

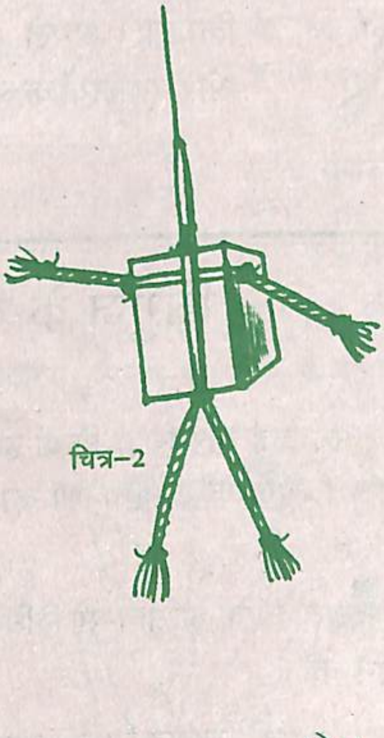

चित्र–2

अब हाथ और पैर बनाने के लिए इन सींकों से रस्सी के टुकड़े बाँध लो।

इसके बाद बची हुई सींक के सिरे पर एक धागा बाँध लो। इस धागे को लम्बा रखना। (चित्र-2)

चित्र–3

पुतली का सिर बनाने के लिए थोड़ी मिट्टी गीली कर लो। मिट्टी सींक और धागे के इर्द-गिर्द लगाओ। तुम जितना छोटा-बड़ा चाहो सिर बना सकते हो। फिर इसे सूखने दो। ध्यान रखना कि धागे को सिर के ऊपर से बाहर निकाल लेना है। (चित्र-3)

जब सिर सूख जाए तो आँख नाक मुँह बनाओ। तुम आँखें रंग से या बटन से, नाक सींक से और मुँह धागे से बना सकते हो।

अब पुतली के कपड़े बनाओ। यह तुम अपने आप बेहतर कर सकते हो।

पुतली को सजाने के बाद उसको नचाने के लिए उसके हाथ में भी धागा बाँध सकते हो। (चित्र-4)

यह पुतली कैसी बनी हमें जरूर लिखना। अगले अंकों में कुछ और पुतलियों के बारे में बताएँगे।

चित्र–4

करके देखो

त्रिभुज के तीन कोण

गणित में तुमने कई बार सिद्ध किया होगा और रटा भी होगा कि त्रिभुज के तीनों कोणों का जोड़ 180 डिग्री होता है।

चलो देखते हैं एक आसान-सी विधि इसी बात को सिद्ध करने की।

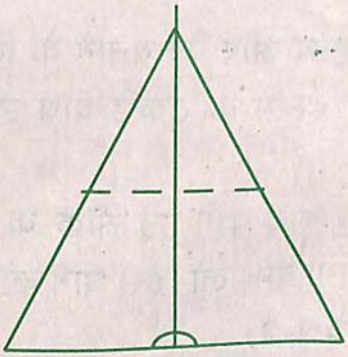

कागज़ का एक समबाहु त्रिभुज काट लो। त्रिभुज के सिर वाले भाग की नोक को आधारवाली रेखा से मिला लो। देखो तुम्हारी आधार वाली रेखा पर (जिसकी माप 180 डिग्री होती है) तीन कोण बन रहे हैं एक त्रिभुज के शीर्ष वाला कोण और दो उसके दोनों तरफ। यानी 180 डिग्री को तीन कोण बाँट रहे हैं।

सपने सच होते हैं

चकमक के जून अंक में 'पाठक लिखते हैं' में 'सपने सच नहीं होते' पत्र पढ़ा।

मेरा यह कहना है कि ऐसी बहुत तो नहीं पर कुछ संस्थाएँ हैं जो उनके (बच्चों के) सपनों को सजाने में लगी हुई हैं। भोपाल में 'मुस्कान', मुम्बई में 'वायस', 'स्पोर्ट', वाराणसी में 'गुड़िया' आदि। ये सभी झोपड़पट्टी, स्ट्रीट चिल्ड्रन, ऐसे ही अन्य बच्चों के साथ उनकी समस्याओं के निराकरण व उनकी शिक्षा और स्वावलम्बन के लिए कार्य कर रही हैं।

ऐसे बच्चों के लिए आर्थिक मदद क्राई, ए.आई.डी., आशा व अन्य बहुत सारी संस्थाएँ कर रही हैं। इसलिए ये कहना गलत होगा कि सपने सच नहीं होते हैं। हो सकता है कुछेक के नहीं हों। पर जहाँ तक हो सकता है लोग व्यक्तिगत तौर पर, संस्थागत तौर पर प्रयास कर रहे हैं।

हर बच्चे के सपने को साकार करने के लिए जरूरी है कि जो लोग इस दिशा में सोचते हैं वे आगे आएँ। कुछ समय ही सही, मगर सोचने की बजाए वह कुछ करने में गुजारें। एक बच्चे के भी सपने को साकार कर सकें तो अच्छा होगा।

● **आशीष, लखनऊ, उ. प्र.**

यह चकमक व चकमक परिवार को पहला खत है। मैं जब दो साल की थी तब से चकमक मेरे घर में आती थी। मेरी मम्मी इसे पढ़ना पसन्द करती थी। मैं बड़ी हो गई हूँ और चकमक पढ़ती हूँ और पसन्द करती हूँ।

मुझे चकमक इसलिए पसन्द है क्योंकि इसमें बच्चे अपने मन की बातें लिखकर भेज सकते हैं। मेरे पास चकमक के लगभग 25–30 अंक हैं। मैंने अब तक की सारी चकमकों को सम्भालकर रखा है। मैं जब भी बोर होती हूँ चकमक पढ़ती हूँ। और हर बार मुझे वह नई लगती है। वैसे तो मेरे घर अन्य पत्रिकाएँ भी आती हैं। लेकिन मैं चकमक ही पसन्द करती हूँ।

जब मैं अपनी कक्षा में चकमक का जिक्र करती हूँ तो सब मुझे आश्चर्य से देखते हैं। मुझे दुख है कि वे इस पत्रिका से अपरिचित हैं।

● **श्रुति चौबे, इलाहाबाद, उ.प्र.**

मैं कम से कम पिछले 10 वर्ष से चकमक को देख रहा हूँ और पिछले 4–5 साल में तो दर्जनों को सदस्यता के लिए उकसाया भी है। मन करता है हर 'बचपन' के साथ चकमक हो। बच्चों की रचनात्मकता, उन्हें सही शिक्षा चकमक जैसी पत्रिकाओं से ही दी जा सकती है। हर स्तम्भ उपयोगी होता है इसका। शिक्षा का नया मॉडल चकमक, संदर्भ से ही सम्भव है।

● **प्रेमपाल शर्मा, वड़ोदरा, गुजरात**

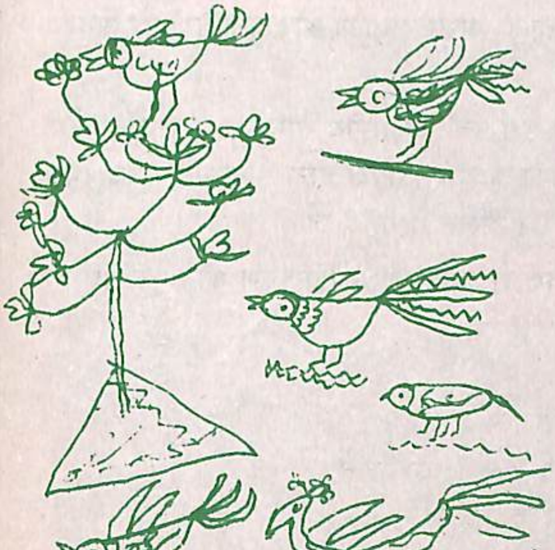

● **रुकमणी यादव, तीसरी, छतरपुर, म. प्र.**

● **रजनी, तीसरी, भोपाल, म. प्र.**

'स्कूली शिक्षा में सुधार' विषय पर सेमीनार के लिए आधार पत्र का आमंत्रण

आगा खान फाउण्डेशन यूरोपीय संघ और अन्य गैर सरकारी संस्थाओं के सहयोग से स्कूली शिक्षा में बेहतरी लाने के लिए PESLE (Programme for Enrichment of School Level Education) नामक कार्यक्रम चला रहा है। यह कार्यक्रम 'स्कूली शिक्षा में सुधार' विषय पर दिसम्बर, 2000 में एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित करने जा रहा है। इस सेमिनार का उद्‌देश्य फील्ड स्तर पर किए जा रहे नवाचारपूर्ण प्रयोगों के लिए स्थानीय पहल, उसके अनुभवों और उससे जुड़े विशेष अध्ययनों आदि का शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे संगठनों से आदान-प्रदान करना है। यहाँ नवाचारपूर्ण प्रयोगों से आशय ऐसे प्रयोगों से है जो स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में लम्बे समय तक अपना प्रभाव डालने का सामर्थ्य रखते हों।

उपरोक्त विषयों पर ज़मीनी स्तर के गैर सरकारी संगठनों, शोध संस्थानों, शोधकर्ताओं या सरकारी संगठनों द्वारा स्थानीय स्तर पर व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से की गई पहल पर आधार पत्र (Strategy Paper) आमंत्रित किए जाते हैं। प्राथमिकता ऐसे केस अध्ययनों, अनुभवों को दी जाएगी जो फील्ड स्तर पर इस क्षेत्र में काम करते समय आने वाली समस्याओं को बेहतर तरीके से व्याख्यापित करते हों। साथ ही जो ऐसे प्रयोग करनेवालों और नीति निर्धारकों के लिए एक सीखने का अनुभव साबित हों। इससे हमें ऐसे प्रयासों का नेटवर्क बनाने और भागीदारी बढ़ाने की संभावनाओं का पता लगाने में भी मदद मिलेगी।

आधार पत्र हस्तलिखित या टाईप किया हुआ हो सकता है। अच्छा होगा यदि यह हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में लिखा हो। पत्र में संगठन/समूह की पृष्ठभूमि, भौगोलिक क्षेत्र और समुदाय (जिसके साथ आप काम कर रहे हैं) का विवरण, कार्यक्रम की विषयवस्तु का विवरण, अनुदान के स्रोत, अपनाई गई रणनीतियाँ, असफलताएँ, उपलब्धियाँ और भावी योजनाओं का ज़िक्र अवश्य होना चाहिए। प्रस्तुत किए जाने वाले पत्र में आपके संगठन के द्वारा की गई पहल के दौरान चर्चित सफलताओं, असफलताओं और चुनौतियों पर अवश्य प्रकाश डाला जाए।

कृपया ध्यान रखें कि प्राप्त सभी आधार पत्रों में से कुल 30 पत्रों को राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुतिकरण के लिए चुना जाएगा। चुनिन्दा आधार पत्रों को प्रकाशित भी किया जाएगा। आपके द्वारा भेजा गया आधारपत्र आगा खान फाउण्डेशन के पास **31 अक्टूबर, 2000** तक हर हालत में पहुँच जाना चाहिए।

आधार पत्र भेजने और किसी भी प्रकार की अन्य जानकारी, सहायता, स्पष्टीकरण और पूछताछ के लिए पता निम्नलिखित है :

सुश्री चारू आनन्द
कार्यक्रम अधिकारी (PESLE), आगा खान फाउण्डेशन,
सरोजिनी हाउस, द्वितीय तल, 6, भगवान दास रोड, नई दिल्ली – 110 001
फोन : 011–3782173, 3782157, 3782185
फैक्स : 011-3782174 attn : NSSRS ई–मेल : pesle@satyam.net.in

वि.

● श्वेता पँवार, सेंधवा, म.प्र.

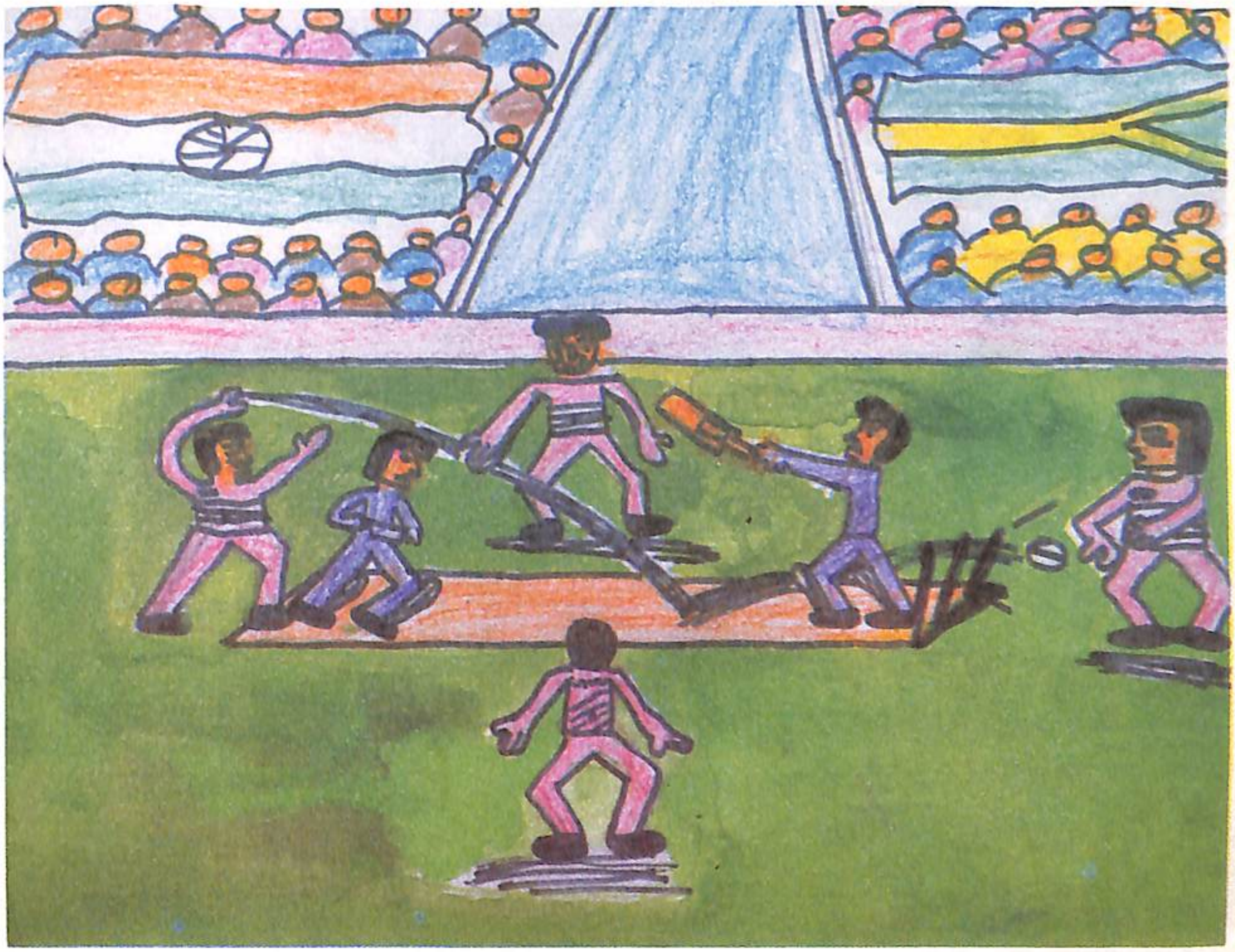

● अंकित सक्सेना, चौथी, भोपाल, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र./261/भोपाल/2000

● निलेश सुन्दर भाई, दसवीं, भावनगर, गुजरात

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : विनोद रायना